



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1  
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 42 ]

नई दिल्ली, बुधवार, मार्च 8, 2000/फाल्गुन 18, 1921

No. 42 ]

NEW DELHI, WEDNESDAY, MARCH 8, 2000/PHALGUNA 18, 1921

वाणिज्य मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 8 मार्च, 2000

विषय : जापान तथा अमरीका से एनिलीन के आयातों से संबंधित पाटन-रोधी जाँच—आरम्भिक निष्कर्ष।

21/1/98/डीजीएडी.—सीमा शुल्क (संशोधित) अधिनियम, 1995 तथा उसके सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं पर लगाए गए पाटन-रोधी सीमा-शुल्क की पहचान, आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए:-

क. पद्धति

1. जाँच के लिए निम्नलिखित पद्धति का पालन किया गया है:-

1) - नाम-निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे इसमें इसके बाद प्राधिकारी कहा गया है) ने उक्त नियमों के अधीन मैसर्स हिन्दुस्तान आर्गेनिक कैमिकल्स लि० (एचओसीएल)मै० नर्मदा चेमातुर पेट्रो कैमिकल्स लि० (एनसीपीएल) तथा मै० एनिशॉक्स पिगमेण्ट्स लि० से जापान तथा अमरीका मूल के या वहाँ से निर्यातित एनिलीन के पाटन का आरोप लगाते हुए एक लिखित याचिका प्राप्त की;

II) याचिका की प्रारम्भिक जाँच से कतिपय त्रुटियों का पता चला था जिन्हें वादी द्वारा बाद में दुरुस्त कर दिया गया था । इसलिए याचिका को सही दस्तावेज माना गया है;

III) वादी द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर प्राधिकारी ने जापान और अमरीका मूल के या निर्यातित एनिलीन के आरोपित पाटित आयातों की जाँच आरम्भ करने का निर्णय लिया । प्राधिकारी ने नियमों के उप नियम 5 (5) के अनुसार, जाँच की कार्रवाई आरम्भ करने से पहले पाटन के आरोप के प्राप्त होने की सूचना सम्बन्ध देशों के दूतावासों को दी,

IV) प्राधिकारी ने सीमाशुल्क अधिनियम, 1975 के अनुच्छेद-29, सीमा-शुल्क उप-शीर्ष सं० 2921.41 के अन्तर्गत वर्गीकृत, उक्त देशों के मूल के या वहाँ से निर्यातित एनिलीन के आयातों के सम्बन्ध में पाटन-रोधी जाँच आरम्भ करते हुए एक सार्वजनिक सूचना, तारीख 13 सितम्बर, 1999 को भारत के राजपत्र , असाधारण में प्रकाशित कर जारी की ।

(v) प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की एक प्रति ज्ञात निर्यातकों (जिनका विवरण वादी द्वारा उपलब्ध कराया गया था ) तथा उद्योग संघों को भेजी और पत्र की तारीख से चालीस दिनों के भीतर अपने विचार लिखित रूप में देने का अवसर प्रदान किया;

(vi) प्राधिकारी ने एक्रेलिक फाइबर के ज्ञात आयातकों (जिनका विवरण वादी द्वारा उपलब्ध कराया गया था ) को सूचना की एक प्रति उपलब्ध कराई और उनसे पत्र की तारीख से चालीस दिनों के भीतर अपने विचार लिखित रूप में देने के लिए कहा ;

(vii) केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमा-शुल्क बोर्ड (सी बी ई सी) से एनिलीन के आयातों के विवरण उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया था;

(viii) प्राधिकारी ने उक्त नियम 6 (3) के अनुसार ज्ञात निर्यातकों तथा विषय-गत देशों के दूतावासों को याचिका की प्रतियाँ भिजवाई;

(ix) प्राधिकारी ने नियम 6 (4) के अनुसार अपेक्षित जानकारी प्राप्त करने के लिए विषयगत देशों के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को एक प्रश्नावली भेजी:

**जापान**

सुमितोमों कैमिकल कम्पनी लिमिटेड

27-1, शिकावा 2-कोमे

चुओ-कू, तोक्यो 104-8260

मित्सुई एण्ड कं० लि०,

सी.पी.ओ. बॉक्स 822

2-1, ओहतेमाची, 1-कोमे,

चियोदा-कू, तोक्यो 100-91

**अमरीका**

बेयर कार्पोरेशन

100 बेयर रोड,

पिट्सबर्ग

पी ए 15205-9741

बी ए एस एफ कार्पोरेशन

3000-कॉन्टीनेन्टल ड्राइव नॉर्थ

मॉउण्ट ऑलिव, एन जे 07828-1234

डूपौण्ट

1007, मार्केट स्ट्रीट

विल्मिंगडन,

डी ई 19898

निम्नलिखित निर्यातकों से उत्तर प्राप्त हुए थे:-

- सुमितोमो कैमिकल कम्पनी लि०, जापान ने प्राधिकारी द्वारा भेजी गई प्रश्नावली का उत्तर दिया था ।
- बेयर कार्पोरेशन, पिट्सबर्ग
- बी.ए.एस.एफ. कार्पोरेशन, माउण्ट ऑलिव, न्यू जर्सी ।
- मै० ई.आई. डूपौण्ट दे नेमोर्स एण्ड कं०, डेलावारे 19898, अमरीका

(x) नियम 6 (2) के अनुसार जाँच के आरम्भ होने की सूचना देते हुए विषयगत देशों के दूतावासों से अनुरोध किया गया था कि वे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली का उत्तर निर्धारित समय में देने के लिए कहें । निर्यातकों को भेजे गए पत्र, याचिका और प्रश्नावली की एक प्रति भी ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों की सूची के साथ उन्हें भेजी गई थी ।

(xi) भारत में एक्रेलिक फाइबर के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों को भी नियम 6 (4) के तहत आवश्यक सूचना मांगते हुए प्रश्नावली की एक प्रति भेजी गई थी:-

- सी.जे.शाह एण्ड कं०
- हरेश कुमार एण्ड कं०
- प्रिया इण्टरनेशनल
- गुजरात डाइस्टफ इण्डस्ट्रीज, बडौदा
- नवीन कैमिकल एण्टरप्राइजिज, आगरा
- आई सी आई इण्डिया लि०, कलकत्ता
- अनार कैमिकल इण्डस्ट्रीज, अहमदाबाद
- एन ओ सी आई एल, थाणे,
- गणेश कैमिकल इण्डस्ट्रीज, मुम्बई
- इण्डो कोलचैम लि०, अहमदाबाद
- इण्ड सॉल्वैण्ट्स एण्ड कैमिकल प्रा० लि०, भरुच
- सहयाद्रि डाइस्टफ एण्ड कैमिकल्स, पुणे
- मारदिया कैमिकल्स लि०, अहमदाबाद
- जे.के. फार्मा, अहमदाबाद
- डिन्टैक्स डाइकैम लि०, अहमदाबाद
- मैट्रोकेम इण्डस्ट्रीज लि०, अहमदाबाद
- सॉयनाइड्स एण्ड कैमिकल्स कं०, सूरत
- कलर कैम लि०, थाणे
- बेयर इण्डिया लि०, थाणे
- जैसिन्थ डाइकैम लि०, मुम्बई
- गायत्री इण्टरमीडिएट्स (प्रा०) लि०, अहमदाबाद
- दि डाइस्टफ मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया, मुम्बई

- इण्डियन कैमिकल मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन, मुम्बई
- इण्डियन ड्रग्स मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन, मुम्बई

निम्नलिखित से उत्तर प्राप्त हुए थे -

- गायत्री इण्टरमीडिएट्स प्रा० लि०
- बेयर इण्डिया लिमिटेड
- आई सी आई इण्डिया लि०
- मैट्रोकेम इण्डस्ट्रीज लि०
- कलर कैम लिमिटेड
- दि गुजरात डॉइस्टफ मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन
- इण्डियन कैमिकल मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन
- सॉयभाइड्स एण्ड कैमिकल्स कं०
- मारदिया कैमिकल्स लि०
- इण्डस्ट्रियल सॉल्वेन्ट्स एण्ड कैमिकल्स लि०

(xii) कुछ हितबद्ध पार्टियों ने उत्तर देने के लिए समय बढ़ाने का अनुरोध किया था जिसे, उचित कारण दिए जाने की वजह से, प्राधिकारी ने मान लिया ।

(xiii) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों के अगोपनीय अंश, एक सावर्जनिक फाइल के रूप में, हितबद्ध पार्टियों के निरीक्षणार्थ उपलब्ध कराए ।

(xiv) सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धान्तों एवं वादी द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर, भारत में विषयगत वस्तु के उत्पादन और बिक्री हेतु उत्पादन की युक्ततम लागत का पता लगाने के लिए, लागत जाँच भी की गई थी ।

(xv) \*\*\* यह संकेत इस अधिसूचना में एक हितबद्ध पार्टी द्वारा गोपनीय आधार पर उपलब्ध कराई गई सूचना का द्योतक है एवं नियमानुसार प्राधिकारी द्वारा उसे ऐसा माना गया है;

xvi) यह जाँच 1 अप्रैल, 1998 से 31 मार्च, 1999 तक की अवधि के लिए की गई थी ।

## ख. वादियों के विचार

2. वादियों ने अपनी याचिका और पश्चात्कर्ती अभिवेदनों में निम्नलिखित मुख्य मुद्दे उठाए हैं:-

(I) तीन वादी ही भारत में एनिलीन के मात्र उत्पादक हैं वर्ष 1996-97 से उनके उत्पादन नीचे दिए गए हैं-

कम्पनी का नाम	उत्पादन (मी.टन)		
	1996-97	1997-98	1998-99
क)एच ओ सी एल	21849	24128	21943
ख)एन सी पी एल	* 21490	20144	17397
ग)एनीरॉक्स	2989	2982	2440

\*एन सी पी एल का उत्पादन 1995-97 (18 महीने) के लिए है ।

वादी कम्पनियाँ भारत में हो रहे कुल उत्पादन का 100% उत्पादन कर रही है और इसलिए याचिका दायर करने के आधार को संतुष्ट करती है ।

(II) एनिलीन के उत्पादन में प्रयुक्त होने वाली मुख्य कच्ची सामग्री बेंजीन, हाइड्रोजन और संकेन्द्रित नाइट्रिक एसिड है । सभी वादी गण नाइट्रोबेंजीन का उत्पादन करते हैं जो एनिलीन के उत्पादन के लिए एक मध्यक है । नाइट्रोबेंजीन का उत्पादन बेंजीन के नाइट्रेशन से होता है । हाइड्रोजन के साथ नाइट्रोबेंजीन के उत्प्रेरकी घटन से एनिलीन का उत्पादन होता है ।

(III) विश्व में अधिकतर उत्पादक, एनिलीन के उत्पादन के लिए नाइट्रोबेंजीन के सीधे हाइड्रोजनीकरण का रास्ता अपनाते हैं । तथापि, उपलब्ध सुविधाओं के अनुसार प्रत्येक उत्पादक की कार्य दशाएँ भिन्न हो सकती हैं । वादियों द्वारा उत्पादित एनिलीन अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का है और आयातित एवं वादियों द्वारा उत्पादित उत्पाद की क्वालिटी में किसी प्रकार का ऐसा कोई अन्तर नहीं है जिसका मूल्य पर प्रभाव पड़े । दोनों अदल-बदल कर प्रयोग किए जाते हैं ।

(iv) एनिलीन का उत्पादन फिनाँल के एमेनोलैसिस द्वारा किया जाता है। यह पद्धति केवल जापान की मै0 मित्सुई पैट्रो कैम, स्टील कैमिकल्स, अमरीका तथा मै0 एरिस्टैक, अमरीका द्वारा प्रयोग की जाती है। इस पद्धति से परिवर्तनशील लागत, सीधे हाइड्रोजनीकरण की पद्धति की तुलना में लगभग 10 प्रतिशत अधिक आती है।

(v) एन सी पी एल तथा एच ओ सी एल विश्व में अनेक देशों को एनिलीन का निर्यात कर रहे हैं। स्वदेशी तथा साथ ही निर्यात बाजार में अधिकतर मात्रा बड़े परिमाण में बेची जाती है। एन पी सी एल के मामले में केवल 2 प्रतिशत मात्रा ही ड्रमों में पैक बिकती है। एच ओ सी एल एनिलीन के निर्यात के लिए केवल 3 प्रतिशत ही ड्रमों में बेचता है। ड्रम में पैकिंग की लागत (ड्रम की तथा श्रम की लागत) लगभग रु0 XXX/-प्रति मी.टन या अ.डा. XXX प्रति मी.टन है। बड़े परिमाण में बिक्री के लिए पैकिंग लागत नहीं होती क्योंकि वे रोड टैंकरों द्वारा ढोए जाते हैं। भारत में सभी आयात बड़े परिमाण वाले हैं। एन पी सी एल ने 1996-97 में अ.डा. 748/ मी.टन एफ ओ बी पर बिट्रेन को 16 मी.टन तथा 1997-98 में अ.डा. 864/ मी.टन एफ ओ बी पर टर्की को 48 मी.टन के निर्यात किए थे। वर्ष 1998-99 में एन पी सी एल ने अ.डा. 910/ मी.टन एफ ओ बी पर टर्की को 16 मी.टन का निर्यात किया था। ये निर्यात ड्रम पैकिंग में थे। अन्य दो उत्पादकों ने टर्की या बिट्रेन से कोई निर्यात नहीं किए।

(vii) भारत में एनिलीन की माँग में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हुआ है। अतः माँग में परिवर्तनों के कारण स्वदेशी उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है। एनिलीन के मूल्य में परिवर्तन का सीधा सम्बन्ध अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य से है और सस्ते आयातों के कारण सामान्यतः बाजार शक्तियाँ ही मूल्य निर्धारण को प्रभावित करती हैं और इसलिए माँग-पूर्ति में कोई अन्तर नहीं है।

(viii) भारत में एनिलीन के उपयोग का ढंग, विश्व बाजार से भिन्न है जहाँ कि उत्पाद का 80 प्रतिशत, एम डी आई के उत्पादन के लिए खर्च होता है। भारत में एनिलीन का उपयोग खड़ कैमिकल्स, फार्मास्यूटिकल्स, रंजक मध्यकों और फोटोग्राफिक रसायनों के लिए होता है।

(ix) विषयगत देशों से आयातों में निर्बाध रूप से वृद्धि हुई है। वर्ष 1998-99 के बारे में आयात सूचना, कान्दला बन्दरगाह द्वारा संकलित सूचना के अनुसार है। यद्यपि एनिलीन ज्यादातर कान्दला पर आयात की जाती है, आयातों का वास्तविक परिमाण कान्दला की मात्रा से अधिक होना निश्चित है। एनिलीन के कुल आयातों में जापान की हिस्सेदारी 96-97 के 76.79 प्रतिशत से बढ़कर 1997-98 में 89.98 प्रतिशत हो गई। अमरीका से एनिलीन के आयातों में भी काफी वृद्धि हुई है जो 1997-98 में 47 मी.टन से बढ़कर 1998-99 में 5623.595 मी.टन हो गए। विषयगत देशों से एनिलीन के भारत में संचयित आयात 81.16 प्रतिशत से अधिक थे, जैसाकि उपलब्ध आँकड़ों से देखा जा सकता है।

(x) स्वदेशी उद्योग को 1998-99 में बिक्री की बड़ी हानि हुई है। स्वदेशी उद्योग की बिक्रियों की मात्रा में 2551 मी.टन की कमी आई जबकि आयातों में 2192 मी.टन (लगभग) की वृद्धि हुई। स्वदेशी उद्योग की बिक्री में गिरावट ही जापान एवं अमरीका के निर्यातकों की बिक्री में वृद्धि हो गई।

(xi) पाटित आयातों से स्वदेशी उद्योग को हुई आर्थिक क्षति का दावा निम्नलिखित कारकों पर आधारित है:-

- क) विषयगत देशों से आयातों में निर्बाध रूप से वृद्धि;
- ख) आयातों की बाजार हिस्सेदारी में वृद्धि तथा स्वदेशी उद्योग की बाजार हिस्सेदारी में गिरावट;
- ग) स्वदेशी उद्योग की बिक्रियों की मात्रा में गिरावट;
- घ) बिक्री मूल्यों में गिरावट ;
- ङ) लाभकारिता में गिरावट।

### ग.3 निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पार्टियों के विचार

#### 1. आयातकों के विचार

##### (I) गायत्री इण्टरमीडिएट्स प्रा० लि०

1. उत्पादक निर्यातक के रूप में, निर्यात बाजार में प्रतिस्पर्द्धी होने के लिए, सस्ते-से-सस्ता कच्चा माल मिलना चाहिए। निर्यातक उत्पादकों से सामग्री



प्राप्त कर सकें, इसके लिए सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएँ चालू करने के बावजूद एच ओ सी तथा एन सी पी एल ने ए आर ओ के अन्तर्गत सामग्री सप्लाई करने से हर बार इंकार कर दिया है ।

2. वादियों की मूल्य निर्धारण की कोई सतत नीति नहीं है । आयात की धमकी के कारण उन्हें अपने मूल्य प्रतिस्पर्द्धी रखने पड़ते हैं । उन्हें 38.5 प्रतिशत + एस ए डी की शुल्क सुरक्षा प्राप्त है । स्थानीय उत्पादकों द्वारा सप्लाई किए गए की तुलना में आयातित सामग्री अधिक मंहगी रही है तथा अन्तर्राष्ट्रीय सप्लायरों द्वारा दी जा रही सेवा की क्वालिटी काफी अच्छी है ।
3. पाटनरोधी शुल्क की लेवी के मामले में, भारत को, जाँचाधीन उत्पाद से उत्पादित उत्पादों हेतु निर्यात बाजार के बड़े भाग को खोना पड़ता है । वादियों के लगभग 40000 मी.टन के स्वदेशी उत्पादन की तुलना में जाँच की अवधि में कुल आयात 6000 मी.टन से अधिक के नहीं है ।

## (2) मैट्रोकेम इण्डस्ट्रीज लि०

1. यह उत्तरदाता रंजक एवं रंजक-मध्यकों का प्रमुख उत्पादक एवं निर्यातक है तथा अपने उत्पादों के लिए कच्चे माल के रूप में एनिलीन की भारी मात्राओं का उपभोग करता है ।

2. स्वदेशी उद्योग - वादीगण एनिलीन के तीन उत्पादक हैं । एच ओ सी एल एवं एन सी पी एल दो मुख्य उत्पादक हैं जबकि एनिलीन के कुल उत्पादन में एनिरॉक्स का मुश्किल से 5 प्रतिशत का योगदान है । एच ओ सी एल पिछले 25 वर्षों से एनिलीन का उत्पादक रहा है किन्तु उनकी क्षमता 1993-94 से 12,000 टन प्रति वर्ष पर स्थिर है । एन सी पी एल ने 1994-95 में अपना उत्पादन शुरू किया जबकि उनका वास्तविक उत्पादन मुश्किल से 4353 मी.टन था । इसका 20,000 टन प्रति वर्ष का पूरा उत्पादन 1996-97 में भी प्राप्त नहीं किया गया था ।

3. माँग:- एनिलीन का प्रयोग विभिन्न रसायन उद्योगों द्वारा विनयल सल्फोन, एसीटों एसिटोनाअलाइड, सल्फानाइलिक अम्ल, सल्फामेथोजाजोल, निग्रेसिक आदि तथा रबड़ रसायनों के उत्पादन में किया जाता है । एनिलीन को अधोवर्ती उत्पादनों के समकक्ष टैरिफ सुरक्षा मिली हुई है जो अनुचित एवं गलत है । प्रति वर्ष 40,000 ही 45,000 टन की प्रति वर्ष की कुल माँग के साथ, उपलब्ध क्षमता का उपयोग लगभग पूरा ही हो जाता है । इसमें कोई भी व्यवधान, सप्लाई स्थिति को बिगाड़ देगा और विभिन्न उद्योगों हेतु अवरोधक होगा ।

4. आयात:-बाजार स्रोतों के अनुसार, माँग और पूर्ति के अन्तर के कारण एनिलीन के आयात पिछले दो वर्षों में 4000 से 5000 तक एवं 1993-95 के दौरान 15,000 से 20,000 तक रहे हैं। अतः स्वदेशी उत्पादन में वृद्धि के कारण आयात लगातार कम होते गए।

5. अन्तर्राष्ट्रीय सप्लायरों के कारण उन्हें हुई हानियों के सम्बन्ध में स्वदेशी उत्पादकों द्वारा दिया गया प्रति-तर्क सत्य नहीं है। स्वदेशी उत्पादक अपना सामान्य क्षमता उपयोग उचित स्तरों पर प्राप्त करते रहे हैं और उत्पाद की कुल माँग की तुलना में उत्पादन काफी कम है। और भी, स्वदेशी उत्पादक अनेक उत्पादों का उत्पादन कर रहे हैं और उनको हुई किसी हानि का किसी एकल उत्पादन से होना जरूरी नहीं है। भारी मूल्य-हास एवं विस्तार या विविधिकरण की योजनाओं के कार्यान्वयन में विलम्ब के कारण लाभ समाप्त हो गए हैं।

6. एनिलीन का विश्वभर में उत्पादन 2 मिलियन टन प्रतिवर्ष का है तथा उच्च उत्पादन स्तरों के कारण संयंत्र आकार स्केल की किफायतें प्राप्त करता है। आई सी आई, डूपौण्ट, मित्सुई, बी ए एस एफ तथा फर्स्ट कैमिकल कार्पोरेशन कुछ मुख्य उत्पादक हैं।

7. एनिलान के मुख्य उत्पादक डिफेनाइल मिथान डिस्साइनेट (डी एम आई) तथा एम डी आई का प्रयोग, निर्माण एवं ऑटोमोबील क्षेत्रों में वृद्धि से सम्बद्ध है। निर्माण तथा आटोमोबील क्षेत्रों की माँग के किसी भी उतार-चढ़ाव के कारण मूल्यों में भी उतार-चढ़ाव आता है। इसलिए कुछ उत्पादकों ने एम डी आई की माँग में वृद्धि को देखते हुए अपनी क्षमता बढ़ा ली है और इसलिए सप्लाय में भारी वृद्धि हुई है।

8. एनिलीन के मूल्यों में थोड़ी अवधि के लिए गिरावट आई थी तथा अन्तर्राष्ट्रीय बाजार मूल्य वास्तव में बढ़ रहे हैं। वर्तमान में अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य अ.डा. 600/मी.टन का है।

9. पाटन-रोधी शुल्क लगाकर सुरक्षा माँगने की बजाय स्वदेशी उत्पादकों को निम्न पूँजी लागत, स्वचालन एवं नाइट्रिक अम्ल तथा हाइड्रोजन के नियन्त्रित उत्पादन का लाभ उठाना चाहिए। कहे गए तथ्य बताते हैं कि स्वदेशी उद्योग को कोई सुरक्षा नहीं दी जानी चाहिए। उन्हें अपनी लागतों का अन्तर्राष्ट्रीय लागतों से मेल कराना चाहिए तथा कुशलता एवं उत्पादकता बढ़ाने के लिए प्रभावी कदम उठाने चाहिए।

### दि गुजरात डाइस्टफ मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन

1. एसोसिएशन की सदस्यता 725 से अधिक इकाइयों की है जो गुजरात राज्य में लघु उद्योग क्षेत्र में है और जो रंजक एवं रंजक मध्यकों के उत्पादन और निर्यात में लगी है।
2. एनिलीन को हमेशा अधोवर्ती उत्पादनों पर लागू दरों के जैसे टैरिफ सुरक्षा मिलती रही है जो स्पष्टतः अनुचित है।
3. एनिलीन उपभोक्ता उद्योग की वर्तमान जरूरत 40000 टन प्रति वर्ष से 45000 टन प्रति वर्ष की है। इतनी माँग पर स्वदेशी क्षमताओं का पूरा उपयोग हो जाता है और कोई परिवर्तन, गड़बड़ या रुकावट सप्लाई में बाधक बन सकती है। स्वदेशी बाजार में माँग/ पूर्ति के अन्तर को पूरा करने के लिए आयात किए जाते हैं।
4. पाटन-रोधी जाँच के आरम्भ हो जाने के परिणामस्वरूप इन उद्योगों के लिए मूल्यों में वृद्धि हो जाएगी और चीन, कोरिया एवं इण्डोनेशिया जैसे देशों से प्रतिस्पर्धा करना कठिन हो जाएगा।
5. विश्व में, एनिलीन की बड़ी खपत एम डी आई के लिए होती है जो पॉलीयूरेथन के लिए प्रयुक्त होती है। जब एम डी आई की माँग अच्छी होती है तो एनिलीन की कीमतें बढ़ जाती हैं और जब माँग कम होती है तो कीमतें नीचे चली जाती हैं।
6. एनिलीन का बेसिक कच्चा माल बेन्जीन है जिसपर केवल 16.5 प्रतिशत आयात शुल्क लगता है और जो एनिलीन के उत्पादकों को अपनी लागत कम करने में मदद करता है। वास्तव में एनिलीन, रंजक सामग्री एवं रंजक मध्यकों, भारी परिमाण वाली औषधों, रबड़ रसायनों आदि हेतु बेसिक कच्चे मालों में से एक होने के कारण उसी श्रेणी में आना चाहिए।
7. कुछ समय पूर्व विश्व मन्दी, एम डी आई की घटी हुई माँग तथा एशियाई देशों में आर्थिक संकट के कारण एनिलीन की अन्तर्राष्ट्रीय कीमतें गिर गई हैं। तब से अब अ.डा. 600/ मी.टन के वर्तमान मूल्य के साथ स्थिति में सुधार हुआ है जो यह दिखाता है कि एनिलीन की विश्व कीमतें बाजार से चालित होती हैं और पाटन से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

8. सभी भारतीय कम्पनियों ने अपने संयंत्र उचित रूप से अच्छे उत्पादन स्तर पर चलाए हैं। ऐसी स्थिति में, जबकि विश्व में अन्य देशों में उत्पादकों को अपने उत्पादन में भारी कमी करने के लिए विवश होना पड़ा था, भारतीय उत्पादक सरकार द्वारा दी गई उच्च शुल्क सुरक्षा के कारण आरामदायक स्थिति में थे।
9. अन्तर्राष्ट्रीय कीमतों के बढ़ जाने पर स्वदेशी उत्पादकों ने अपनी स्थानीय कीमतों में पिछले चार महीनों में 15 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि कर दी है।
10. एनिलीन के प्रयोक्ताओं के रूप में इस एसोसिएशन के सदस्यों ने निर्यात बाजार में अपनी हिस्सेदारी कड़ी मेहनत से प्राप्त की है। यदि भारत के एनिलीन के उत्पादकों को और आगे सुरक्षा दी जाती है तो मूल्य-वर्द्धित विदेशी मुद्रा कमाने वाले इस निर्यात व्यापार को अन्य देशों द्वारा अपहृत कर लिया जाएगा।

### (3) सॉयनाइड्स एण्ड कैमिकल्स कम्पनी

1. वर्ष 1995-96 तथा 1996-97 में आयात रु. 23,000/- से रु. 24,000/मी.टन के रहे। वर्ष 1997-98 के दौरान अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में मूल्यों के मजबूत हो जाने के कारण आयात ऊँची कीमतों पर किए गए। एनिलीन की कीमतें फिर गिर गई हैं और इसलिए 1998-99 के दौरान लगभग रु. 23,000/मी.टन पर आयात किए गए।
2. एनिलीन तरल रूप में 200 लीटर के ड्रमों में पैक और कंटेनर में भरकर या खुले (लूज) माल के रूप में आयात की जा रही है। खुले माल के रूप में एनिलीन, कान्दला बन्दरगाह पर आती रही है जबकि ड्रमों में पैक एनिलीन, मुम्बई बन्दरगाह पर आयात की जा रही है। ऐसे ड्रम पैकिंग और कन्टेनर भाड़े का मूल्य, खुले माल की तुलना में 200 से 250 अमरीकी डालर अधिक है पैकेजिंग पक्ष को ध्यान में रखते हुए, यदि मूल्यों की तुलना की जाय तो वादियों का यह कहना सही नहीं है कि आरोपित पाटन वाले देशों से आयात निम्नतर मूल्यों पर है और अन्य देशों से किए गए आयात ऊँचे मूल्यों पर हैं। सही तस्वीर पाने के लिए अन्य देशों से तथा आरोपित पाटन वाले देशों के मूल्यों की तुलना करते हुए पैकेजिंग यंत्र के लिए उचित समायोजन देने होंगे।

3. यह देखा गया है कि कान्दला बन्दरगाह पर यातायात की भीड़-भाड़ हमेशा रहती है जिससे माल की छुड़वाई में देरी होती है और काफी विलम्ब-शुल्क देना पड़ता है जो सी आई एफ मूल्य का लगभग 10 प्रतिशत पड़ता है । यह भण्डारण, साख पत्र खोलने और बैंक प्रभार, हैण्डलिंग, छुड़वाई और अग्रेषण, घाट-शुल्क आदि के लिए सी आई एफ मूल्य के लगभग 6 प्रतिशत के खर्च के अलावा होता है । ड्रमों में पैक एनिलीन के मामले में ऐसे उच्चतर खर्च 3 प्रतिशत से अधिक नहीं है । अन्य देशों एवं आरोपित पाटन वाले देशों के आयातों के तुलनात्मक मूल्यों का पता लगाने के लिए, इस निर्णय पर पहुँचने के लिए कि अन्य देशों से आयात उच्चतर मूल्यों पर किए गए हैं, उपरोक्त हेतु समुचित समायोजन आवश्यक है ।

4. पिछले दो वर्षों एवं चालू वर्ष के आजतक के लिए आयातों एवं निर्यातों के देशों, मात्रा, मूल्य के विवरण वादियों द्वारा प्राधिकारी को दिए जाने आवश्यक हैं । तथापि, वाद के अ-गोपनीय पाठ में वादियों ने बड़ी चतुराई से आयातों के सम्बन्ध में पिछले दो वर्षों के आंकड़ों को बचा लिया है और कहा है कि 1998-99 के दौरान किसी भी वादी ने एनिलीन का आयात नहीं किया है । जबकि उत्तर वर्ष 1998-99 के लिए दिया गया है, पिछले दो वर्षों के लिए कुछ भी नहीं कहा गया है । वादियों ने विगत में एनिलीन का आयात किया है । इस उत्तर देने वाले ने 1994-95 में मै0 एच ओ सी एल से आयातित माल खरीदा था ।

5. स्वदेशी उद्योग ने 1996-97 में 39165 मी.टन, 1997-98 में 47254 मी.टन तथा 1998-99 में 41781 मी.टन का उत्पादन किया था । उन्होंने 1996-97 में 156 मी.टन, 1997-98 में 3111 मी.टन तथा 1998-99 में 1543 मी.टन का निर्यात किया था । उत्पादन में से निर्यातित मात्रा घटा देने के बाद स्थानीय बिक्री के लिए 1996-97 में 39009 मी.टन, 1997-98 में 44143 मी.टन एवं 1998-99 में 40238 मी.टन की मात्रा रहती है । इस प्रकार स्वदेशी बिक्रियों के लिए उत्पादन में कोई कमी नहीं हुई है ।

6. विषयगत देशों में सामान्य मूल्य, व्यापार पत्रिकाओं/पत्रों के आधार पर माना गया है जो मूल्य के बारे में मोटी-मोटी जानकारी देते हैं । पत्रिकाओं/पत्रों में दिए गए मूल्यों एवं स्वदेशी बाजार में बिक्री सामग्री के मूल्यों में भारी अन्तर देखा गया है।

7. स्वदेशी उद्योग की संस्थापित क्षमता 1996-97 के लिए 48100 तथा 1997-98 के लिए 48500 होनी चाहिए । इनके लिए औसत क्षमता उपयोग क्रमशः 81.42 प्रतिशत तथा 97.43 प्रतिशत बनता है । वर्ष 1998-99 में एन सी पी एल का औसत क्षमता उपयोग 86.99 प्रतिशत बनता है न कि 69.59 प्रतिशत क्योंकि एन सी पी एल की वर्ष 1998-99 में क्षमता (लाइसेंसशुदा एवं विस्थापित) 20000 मी.टन थी, 25000 मी.टन की नहीं थी जैसाकि याचिक के अ-गोपनीय पाठ में दिया गया है । अतिरिक्त 25 प्रतिशत क्षमता उपयोग नवीकरण एवं सुधारों के माध्यम से प्राप्त नहीं किया जा सकता । क्षमता का बढ़ाया जाना 1998-99 के अन्त के दौरान हुआ होगा ।

8. माल-सूची के आँकड़े नहीं दिए गए हैं ।

9. एनिलीन पर आयात शुल्क में वृद्धि से औषधों, फार्मास्यूटिकल्स, रंजकों, रबड़ रसायनों आदि के मूल्य बढ़ जाएँगे जिसका निर्यातों पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा ।

10. वादीगण, स्वदेशी मूल्यों से काफी नीचे के मूल्यों पर विषयगत माल का निर्यात कर रहे हैं । ये स्वदेशी मूल्य कृत्रिम ढंग से अन्तर्राष्ट्रीय मूल्यों से काफी ऊँचे बनाए रखे गए हैं ।

#### (4) मै0 आई सी आई इण्डिया लि0

1. यह उत्तरदाता, ब्रिटेन की इम्पीरियल कैमिकल इण्डस्ट्रीज प्रा0 लि0 कं0 है। यह अन्य उत्पादों के अलावा रबड़ रसायनों के उत्पादन में लगी एक व्यापारिक तथा उत्पादक कम्पनी है । रबड़ रसायनों के उत्पादन के लिए ये एनिलीन का आयात नहीं करते ।

2. विषयगत उत्पाद की भारत में बिक्री के सम्बन्ध में उन्होंने संदर्भित अवधि के दौरान एनिलीन हेतु एच ओ सी एल एवं एन सी पी एल के साथ ठेका कर रखा था ।

### (5) बेयर इण्डिया लि०

1. बी आई एल ने पिछले तीन वर्षों अर्थात् अप्रैल, 1996 से मार्च, 1999 के दौरान एनिलीन का सीधे ही आयात नहीं किया है। बी आई एल ने अक्टूबर दिसम्बर 1998 के दौरान सी वी डी, 4 प्रतिशत के.बि.शु.परिवहन और मार्ग बीमे सहित ₹ 42.30/ कि.ग्रा. की दर से व्यापार से 98.21 मी.टन एनिलीन केवल खरीदा ही है। 2. बी आई एल ने इसकी एनिलीन की खरीदों के लिए स्थानीय उत्पादकों का पूरी तरह से समर्थन किया है तथा अग्रिम निर्मोचन आदेश (ए आर ओ) या अग्रिम मध्यक लाइसेंस के तहत स्थानीय खरीद हेतु सभी पेशगी लाइसेंसों का पूरा उपयोग किया है।

3. पिछले बारह महीनों में एनिलीन के बहुत ही आकर्षक अन्तर्राष्ट्रीय मूल्यों के बावजूद बी आई एल ने आयात नहीं किए और एनिलीन की अपनी खरीदों के लिए स्थानीय उत्पादकों को पूरा समर्थन दिया है।

### (6) इण्डियन कैमिकल मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन

1. एनिलीन के उपभोक्ताओं एवं उत्पादकों की सम्मिलित एक बैठक में एच ओ सी एल द्वारा यह कहा गया था कि पिछले तीन वर्षों के दौरान एनिलीन के आयातों में वृद्धि हुई है जिससे स्वदेशी उत्पादकों का क्षमता उपयोग 87 प्रतिशत से गिरकर 78 प्रतिशत हो गया है। जबकि स्वदेशी उद्योग निर्यातों के विरुद्ध नहीं है, किन्तु यह समान उचित व्यापार दशा चाहता है। अमरीका/जापान के अन्तर्राष्ट्रीय मूल्यों में 2 वर्षों 20 प्रतिशत की गिरावट आई है। एनिलीन का सामान्य मूल्य अमरीका में लगभग 1000 अ.डा./टन तथा जापान में लगभग अ.डा. 1600/टन का है। तथापि, इन देशों से भारतीय बाजार को एनिलीन का निर्यात लगभग अ.डा. 500/टन के मूल्यों पर किया जा रहा है। जो पाटन को स्पष्ट रूप से स्थापित करता है।

2. उपभोक्ताओं ने कहा कि भारत में उत्पादित एनिलीन की क्वालिटी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की है। देश के रंजक एवं रंजक मध्यक के अधिकतर उत्पादक एनिलीन के स्वदेशी उत्पादकों से एनिलीन ले रहे हैं। एनिलीन से प्राप्त रंजकों एवं रंजक मध्यकों के निर्यात ₹ 500 करोड़ तक के हैं।

3. रंजक मध्यकों में एनिलीन अंश जैसे विनायल सल्फोन, कुल लागत का लगभग 50 प्रतिशत है। विनायल सल्फोन के निर्यात मूल्य, जो पहले लगभग अ.डा. 4 कि.ग्रा. थे, अब अ.डा. 1.8 कि.ग्रा. तक नीचे आ गए हैं। अतः एनिलीन के मूल्यों में और आगे वृद्धि विनायल सल्फोन जैसे रंजक मध्यकों के निर्यातों की लाभकारिता को सीधे ही प्रभावित करेगी।

- 4 रबड़, रसायनों के मामले में, प्रत्येक छः में से चार रबड़, रसायन, एनिलीन पर आधारित हैं। जबकि रबड़, रसायन थोड़ी मात्राओं में आयात किए जा सकते हैं, एनिलीन के आयात तब तक किफायती नहीं होते जब तक कि आयात बड़े पार्सल भारों में नहीं किया जाए। वास्तव में आयात मूल्य, स्वदेशी मूल्यों से पहले ही ऊंचे हैं और आज आयात शून्य हैं।
- 5 विशिष्ट मध्यम उत्पादकों (डाइमिथाइल एनिलीन) ने कहा है कि उनके आयात, निर्यातों के बदले हैं। वे स्वदेशी मूल्यों पर एनिलीन नहीं खरीद सकते क्योंकि उन्हें निर्यातों के लिए डीइपीबी प्राप्त नहीं होता। निर्यात उत्पादन के लिए ए आर ओ दरों पर खरीदने से 12 % -15 % बिक्री कर लगता है जिससे उनके निर्यात अलाभकारी हो जाते हैं।
- 6 स्वदेशी उद्योग का क्षमता उपयोग मुख्यतः इसलिए गिरा है कि उत्पादक एन सी पी एल की 5000 मी.टन की संस्थापित क्षमता को ले रहे हैं। वर्ष 1997-98 की संस्थापित क्षमता के आधार पर क्षमता उपयोग में केवल आंशिक गिरावट आई है।
- 7 वादियों द्वारा एनिलीन के चालू मूल्यों (अमरीकी डालर) 1000 से 1500 प्रतिटन) के संबंध में दी गयी सूचना, जापान और अमरीका की खुदरा सप्लाय हेतु स्थल मूल्य प्रतीत होती है। यदि ये वास्तविक मूल्य होते तो एच ओ सी ने निर्यात किया होता तथा स्वदेशी बिक्रियों की बजाय एनिलीन निर्यातों से उच्चतर प्राप्तियाँ की होतीं।
- 8 एनिलीन हेतु क्षमता उपयोग 87 % से घट कर 78 % तक आ गया है। यह रंजक मध्यकों के कारण इतना है अन्यथा और भी नीचे होता। मूल्यों के संबंध में, स्वदेशी एनिलीन मूल्यों में 20 % की कमी की तुलना में विनयल सल्फोन मूल्य 50% से अधिक कम हुए हैं जो उसी दो वर्षों की अवधि में अ,डी, 4 से घटकर अ,डा, 1.8 हो गए।
- 9 क्लेरियान्ट/कलर-कैम  
एच ओ सी एल तथा एन पी सी एल, एनिलीन के दो प्रमुख उत्पादक हैं। तीसरे उत्पादक मै. एनिरॉक्स पिगमेण्टस लि (जिसे पहले धनबाद कैमिकल्स लि० के नाम से जाना जाता था) का उत्पादन मूलतः बंधे हुए उपभोग के लिए है और उनका कुल उत्पादन, एनिलीन के कुल उत्पादन के 5 % से अधिक नहीं होगा।



2. एनिलीन के सस्ते स्रोतों को प्राथमिकता होगी जिससे अधोवर्ती उत्पादों के भारतीय उत्पादक, चीन से इन उत्पादों के आयातों का मुकाबला कर सकेंगे
3. विश्व भर में एनिलीन के कुल मिलाकर चौदह उत्पादक हैं जो कुल 1.8 मिलियन टन का उत्पादन करते हैं । खासियत यह है कि संयंत्रों का आकार 60000 टन प्रतिवर्ष और अधिक का है जिसमें पैमाने की किफायतों के लाभ मिलते हैं ।
4. जबकि अधिकतर एनिलीन का उत्पादन नाइट्रोबेंजीन पद्धति से होता है, कुछ पद्धतियों में फिनोल भी आरम्भिक सामग्री है तथा तदनुसार, अनेक अवसरों पर लागत हिसाबों में अन्तर हो सकता है ।
5. एनिलीन के मूल्य की परिवर्तनशीलता, चाक्रिक/मौसमी माँग का प्राकृतिक परिणाम है । इस पर बाजार शक्तियों का भी प्रभाव पड़ता है जिससे माँग और पूर्ति में अन्तर बढ़ता है ।
6. एनिलीन के मूल्यों में असामान्य गिरावट 1998 की एक तिमाही में ही आई । ऐसी इक्का-दुक्का घटनाएँ, एनिलीन के भविष्य के आरोपित सस्ते आयातों के विरुद्ध सतत् (ब्लैकट) सुरक्षा का आधार नहीं हो सकती ।
7. स्थानीय उत्पादकों को कोई विशेष सुरक्षा उन्हें अवस्था का नाजायज लाभ उठाने के लिए लालायित करेगी और उपभोक्तों को भय है कि तब एनिलीन के मूल्य असामान्य रूप से ऊँचे होंगे जैसाकि 10 वर्ष पहले हुआ था जबकि एच ओ सी एल एकाधिकार की स्थिति में था ।

**(9) मरदिया कैमिकल्स लि०**

1. एनिलीन तेल, रंजकों एवं विनाइल सल्फोन जैसे रंजक मध्यकों के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण कच्चा माल है । यह विनाइल सल्फोन अत्यन्त निर्यातोन्मुख उत्पाद है । इस उत्पाद में एनिलीन का ही मूल्य, कच्चे माल के कुल मूल्य के 50 प्रतिशत से अधिक का है ।
2. यदि पाटन- रोधी शुल्क लगाया जाता है तो स्वदेशी उत्पाद अपने मूल्य बढ़ा देंगे जिससे विनाइल सल्फोन तथा विनाइल सल्फोन आधारित रंजकों के निर्यातों पर गंभीर प्रभाव पड़ेगा । देश की निर्यात प्राप्तियों में 500 से 700 करोड़ तक का प्रभाव पड़ेगा ।
3. लघु उद्योग इकाइयाँ एनिलीन आधारित रंजकों एवं रंजक मध्यकों के उत्पादन में लगी हैं । यदि स्वदेशी उत्पादकों के लाभ के लिए पाटन- रोधी शुल्क लगा दिया जाता है तो ये उद्योग बंद हो जायेंगे और लाखों लोग बेरोजगार हो जाएँगे ।

4. जैसाकि उनके द्वारा दावा किया गया है कि उनके स्वदेशी उपयोग के लिए जापान में अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य अ.डा. 1500/मी.टन तथा अमरीका में लगभग अ.डा. 1100/मी.टन के हैं । स्वदेशी उत्पादकों को निर्यात कर देना चाहिए था । यह सत्य कि एच ओ सी ने एक परेषण भेजा जो अ.डा. 500 से नीचे था और कुछ माल अ.डा. 300-400 /मी.टन पर था, अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य बताता है ।
5. वादियों ने यह भी कहा है कि उन्होंने ब्रिटेन को अ.डा. 3099/मी.टन तथा टर्की को 4589/मी.टन की दर पर निर्यात किया है और उनकी औसत निर्यात प्राप्ति अ.डा. 971/मी.टन की थी । यदि एनिलीन विश्वभर में उपलब्ध है तो यह मानने योग्य नहीं है कि ब्रिटेन भारत से 3099/मी.टन की दर पर आयात करेगा ।
6. एच ओ सी एल द्वारा 1998-99 में कुल किए गए निर्यात 567 मी.टन के तथा एन सी पी एल के 976 मी.टन के थे । इस प्रकार वर्ष 1998-99 के 41781 मी.टन के कुल उत्पादन में से भारत ने कुल निर्यात 1543 टन के थे । इस प्रकार निर्यातित मात्रा, कुल उत्पादन का केवल लगभग 3.7 प्रतिशत थी । यदि अमरीका एवं जापान में कीमतें इतनी ही ऊँची थीं जितनी कि वादियों द्वारा कही गई हैं, तो उन्हें और अधिक मात्रा का निर्यात करना चाहिए था ।

**(10) इण्डस्ट्रियल सॉल्वेन्टस् एण्ड कैमिकल्स लि०**

1. एनिलीन तेल , अनेक उद्योगों के लिए महत्वपूर्ण कच्चा माल है । वह इस उत्तरदाता के तैयार उत्पादों जैसे एन, एन डिमैथाइल एनिलीन, एन-मेथाइल एनिलीन, एन, एन-डिमैथाइल एनिलीन, एथाइल बेंजाइल एनिलीन जो अल्कलीकृत एनिलीन सम्मिश्रण है , के उत्पादन में कच्चे माल की लागत का 75% अंश होता है ।
2. यद्यपि क्षमता बड़ी है, किन्तु स्वदेशी एवं अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में कम माँग होने तथा चीन एवं यूरोप से सस्ते आयातों के कारण संयंत्र 40 प्रतिशत की क्षमता पर चल रहा है ।
3. भारत में एनिलीन के उत्पादक अपनी क्षमता के लगभग 80 प्रतिशत पर संयंत्रों को चला रहे हैं और इसलिए यह महसूस किया गया है कि वे क्षमता उपयोग के मामले में काफी कुशल हैं ।

## ॥ निर्यातकों के विचार

### (1) बी ए एस एफ

जाँच की अवधि (अर्थात् 1 अप्रैल 1998 से 31 मार्च, 1999 तक) के दौरान किसी समय बी ए एस एफ कार्पोरेशन या बी ए एस एफ के वितरक ने भारत को एनिलीन का कोई निर्यात नहीं किया।

### (2) बेयर कार्पोरेशन

अपने सर्वोत्तम ज्ञान के अनुसार बेयर कार्पोरेशन ने 1 अप्रैल, 1998 से 31 मार्च 1999 के सम्बन्धित समय में एनिलीन का उत्पादन, निर्यात, बिक्री या निर्यात नहीं किया था। इसलिए बेयर कार्पोरेशन पर जाँच लागू नहीं है।

### (3) मै0 ई आई डूपोण्ट दे नेमोअर्स एण्ड कं.

1. एनिलीन के प्रमुख स्वदेशी उत्पादकों की क्षमता 25000 टन प्रति वर्ष से कम है जबकि विश्व में, पैमाने की किफायत को उचित ठहराने और एनिलीन के प्रतिस्पर्द्धी उत्पादक के रूप में जाने जाने केलिए विशिष्ट संयंत्र आकार न्यूनतम 50,000 प्रति वर्ष का है। निम्नतर क्षमताओं के साथ, उत्पादन की लागत, विश्व में कहीं भी स्थापित औसत संयंत्र की संस्थापित क्षमता की तुलना में उच्चतर होगी। डूपोण्ट की एनिलीन उत्पादन की क्षमता 1,50,000 टन प्रति वर्ष की है।
2. भारत के एनिलीन उत्पादकों को शुल्क सुरक्षा के माध्यम से पहले ही लाभ मिल रहा है। एनिलीन एक बेसिक कच्चा माल है जो अनेकों उद्योगों द्वारा प्रयोग किया जाता है। एक बेसिक आर्गेनिक रसायन होने पर भी एनिलीन, जो बेंजीन है, पर केवल 16.5 प्रतिशत का टैरिफ लगता है जिससे स्वदेशी उत्पादकों को अतिरिक्त लाभ तथा शुल्क सुरक्षा मिलती है।
3. एनिलीन एक बेसिक कच्चा माल है जो बेंजीन से बनता है। एनिलीन के उत्पादन की पद्धति निम्नलिखित है:

नाइट्रेशन

रिडक्शन

बेंजीन —

नाइट्रोबेंजीन

एनिलीन

जाँच अवधि के दौरान बेंजीन के अन्तर्राष्ट्रीय बाजार मूल्य अ.डा. 160 तथा अ.डा. 200 प्रति मी.टन के रहे । तथापि, जब नाइट्रेशन किया जाता है तो नाइट्रोबेंजीन का उत्पादन 1.35 से 1.40 गुने तक बढ़ जाता है । एक कुशल विश्वस्तरीय संयंत्र में एनिलीन के उत्पादन हेतु कच्चे माल की लागत अ.डा. 350 प्रति मीट्रिक टन से अधिक नहीं होगी । यह स्पष्टतः बताता है कि लागत जमा भाड़ा आधार पर लगाए जाने पर भारत को किए गए निर्यात का मूल्य, अमरीका या विश्व में कहीं भी उत्पादकों द्वारा एनिलीन के उत्पादन की औसत लागत से कम है।

4. एनिलीन की विश्व की माँग एमडी आई (डाइफिनाइल मिथान डाइसोसाइनेट) से चलित है जो पॉलीयूरेथन कठोर रूपों के लिए प्रयोग किया जाता है । एम डी आई हेतु बाजार का विकास, आटोमोबील क्षेत्र तथा संरचना क्षेत्र के विकास से जुड़ा हुआ है और 1998-99 में सुदूर पूर्व संकट के कारण इन दोनों क्षेत्रों में भारी मंदी आई जिसे विश्वभर में अनुभव किया गया था । अन्य बाजारों को सप्लाइयों के लिए एनिलीन की ज्यादा उपलब्धता हेतु प्रमुख कारणों में से यह एक था । तथापि, जाँच अवधि के दौरान एनिलीन के आयात पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा था ।

4. एनिलीन के आयातों की जरूरत हमेशा ही स्वदेशी बाजार में माँग तथा पूर्ति अन्तर को पूरा करने के लिए होती रही है । प्रकाशित आँकड़ों एवं बाजार सूचना से एनिलीन के आयात नीचे दिए गए के अनुसार रहे हैं-

1996-97	1277 मी.टन
1997-98	5847 मी.टन
1998-99	5000 मी.टन

प्रमुख स्वदेशी उत्पादकों की क्षमता उपयोग प्रत्येक के लिए 87 प्रतिशत रहा है जो भारत में एनिलीन के आयातों में असामान्य वृद्धि नहीं बताता ।

6. एम डी आई की माँग में मंदी के कारण 1998-99 में एनिलीन के विश्व मूल्यों में भारी गिरावट आई जिसका एनिलीन के विश्व मूल्यों पर सीधा प्रभाव पड़ा । भारत में आयातों हेतु दिए गए मूल्य, वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय मूल्यों के समान थे ।

7. वर्ष 1996-97 से चालू वर्ष तक, एनिलीन मूल्य अ.डा.\*\*\* से अ.डा.\*\*\* प्रति मीटरिक टन के बीच रहे और 1998 की तीसरी तथा चौथी तिमाही में अस्थायी तौर पर गिरे थे । मूल्यों में 1999 की पहली तिमाही में संशोधन किया गया और 1999 की दूसरी तिमाही तक वे सामान्य स्तर तक आ गए । प्रकाशित मूल्यों पर विश्वास नहीं किया जा सकता क्योंकि वे स्वदेशी बाजार में बड़ी मात्रा के ग्राहकों के वास्तविक सौदों को नहीं दिखाते जो कि कापु नीचे थे और गोपनीयता के लिए इस सूचना को कमी उद्घाटित नहीं किया जाता है ।
8. डूपोण्ट-द्वारा जाँच अवधि के दौरान दिया गया मूल्य अ.डा. \*\*\* प्र.मी.टन रहा महसमें अ.डा. \*\*\*/ प्रति मी.टन का न्यूनतम मूल्य स्पष्टतः विश्वभर में विश्व मूल्यों में गिरावट बताते हैं । न्यूनतम मूल्य पर भी, शुल्क एवं अन्य विविध खर्चों को हिसाब में लेते हुए आयात मूल्य रु.\*\*\*/कि.ग्रा. बनता है । स्वदेशी उत्पादकों ने उसी अवधि में लगभग रु.\*\*\*/कि.ग्रा. एनिलीन बेची है यद्यपि उन्होंने अल्प सूचना पर छोटी छोटी मात्राएँ सप्लाई करने की योग्यता एवं स्वदेश उत्पादक होने के कारण कुछ लाभ (प्रीमियम) अवश्य कमाया होगा । यह सत्य है कि उन्होंने ऐसे नीचे मूल्यों पर एनिलीन की बिक्री की है, यह दिखाता है कि स्वदेशी उत्पादक स्वयं ही अण्डरकटिंग कर रहे थे ।
9. आर्थिक क्षति, यदि कोई है तो वह अधिकतम बाजार हिस्सेदारी पाने के लिए स्वदेशी उत्पादकों की त्रुटिपूर्ण विपणन चाल थी । बेसिक कच्चे माल अर्थात् बेन्जीन एवं एनिलीन के अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य 1999 के आरम्भ से चढ़े हैं तथापि, स्वदेशी उत्पादकों ने अपने उत्पादों में वृद्धि की घोषणा 1 जुलाई, 1999 से की जो वास्तव में छः महीने बाद किया गया जो स्थानीय बाजार में उनकी प्रतिस्पर्धा की तीव्रता को बताता है ।

#### (4) सुमितामो कैमिकल कम्पनी लि०

1. एस सी सी ने अप्रैल, 1998 से मार्च 1999 तक की अवधि के दौरान जापन के व्यापारिक कम्पनियों के माध्यम से लगभग 268 मी.टन का निर्यात किया जोकि उपरोक्त अवधि के लिए कुल आयात का केवल 2.9 प्रतिशत होता है।

2. उक्त 268 मी.टन में से 251.86 मी.टन का निर्यात मई, 1998 में तथा 16 मी.टन का निर्यात जून, 1998 में किया गया था । तबसे एस सी सी ने कभी भी एनिलीन का भारत को निर्यात नहीं किया और उसकी उक्त उत्पाद के भारत को निर्यात करने की तत्कालिक योजना भी नहीं है ।
3. भारत को उनके निर्यात के परिमाण को मात्रा के रूप में तौलते हुए एस सी सी के निर्यात एवं भारत में स्वदेशी उद्योग को हुई आरोपित क्षति के बीच कारणात्मक सम्बन्ध न्यूनतम होना चाहिए ।
4. एस सी सी का मूल्य, अन्य जापानी निर्यातकों के एनिलीन के निर्यात मूल्यों से बहुत ऊँचा है । मूल्यों के रूप में, एस सी सी के निर्यात एवं भारत में स्वदेशी एनिलीन उद्योग के बीच कारणात्मक सम्बन्ध सिद्ध करने के लिए पर्याप्त साक्ष्य नहीं है ।
5. जापानी कैमिकल वीक में दिए गए एनिलीन मूल्य को 'भाग III पाटन का साक्ष्य' में उठाया गया है । तथापि, इस अखबार में दिए गए आँकड़ें, जापान में व्यापार के सामान्य व्यवहार में एनिलीन के वास्तविक मूल्य लिए गए हैं । इस निर्यातकर्त्ता ने 'जापान कैमिकल वीक' में एनिलीन मूल्यों का पता 1996 की जनवरी से लगाया है और पाया है कि दिए गए मूल्य का कम-से-कम तीन वर्षों से संशोधन नहीं हुआ है । यह दिखाता है कि उक्त मूल्य, सामान्य मूल्य को निश्चित करने का साक्ष्य नहीं हो सकता ।
6. एस सी सी, जापान में 60,000 मी.टन से अधिक एनिलीन बेचता है । यह इस मामले में सामान्य मूल्य हेतु आधार होना चाहिए ।

**(घ) उठाए गए मुद्दों की जाँच**

4. वादी, निर्यातकों, आयातकों तथा अन्य हितबद्ध पार्टियों द्वारा किए गए पूर्ववर्ती अभिवेदनों, जिस सीमा तक ये नियमों के अनुसार ये सम्बद्ध है तथा जिस सीमा तक ये मामले को प्रभावित करते हैं, की जाँच की गई और विचार किया गया और उनके इन निष्कर्षों में उचित स्थानों पर निपटाया गया है ।

**(ड) विचाराधीन उत्पाद**

5. वर्तमान जाँच में विचाराधीन उत्पाद एनिलीन है जो एनिलीन तेल के नाम से भी जाना जाता है। एनिलीन पारदर्शी, तैलीय, ताजा आस्वित होने पर रंगहीन से पीला-पन लिए हुए होता है। रोशनी या हवा लगने पर यह गहरा हो जाता है। एनिलीन एक प्राथमिक एमाइन सम्मिश्रण है तथा औषध, फर्मास्यूटिकल्स, रंजक एवं रंजक मध्यकों जैसे महत्वपूर्ण उद्योगों हेतु बेसिक आर्गेनिक रसायन है। एनिलीन कुछ और उद्योगों जैसे रबड़ रसायन, विस्फोटक, रेजिन आदि में भी प्रयोग किया जाता है।

एनिलीन, रबड़ रसायनों (वल्कलीकरण, वर्द्धकों, प्रति-आक्सीकारकों), रंजकों, औषधों जैसे एन्लजीन, सल्फा औषध, फोटोग्राफिक रसायनों (हाइड्रोक्विनान), आइसोसायनेट्स (एम डी आई या मैथिलीन डाइफिनाइलीन डाई-आइसोसायनेट) के लिए एक मध्यक है। भारत में एनिलीन के उत्पादन का 70 प्रतिशत रबड़ रसायनों, औषधों और औषध मध्यकों एवं रंजक उद्योगों में प्रयुक्त होता है जबकि विश्व में एनिलीन का 80 प्रतिशत एम डी आई में प्रयुक्त होता है।

एनिलीन सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 29 में, सीमा-शुल्क उप-शीर्ष नं. 2921.41 के अन्तर्गत वर्गीकृत है। तथापि, यह वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और वर्तमान जाँच के क्षेत्र पर किसी प्रकार से बाध्यकर नहीं है।

**च. समान वस्तुएं**

5. एनिलीन का उत्पादन और बिक्री आई एस आई के विनिर्देशों के अनुसार किए जाते हैं जो रसायन के गुणों को बताता है। एनिलीन की क्वालिटी इसकी शुद्धता द्वारा बताई जाती है। एनिलीन की मानक क्वालिटी सामान्यतः भार के अनुसार 99.8 प्रतिशत शुद्धता की होती है। तथापि, एनिलीन के उत्पादन में पद्धति, उपस्कर या टैक्नालॉजी में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

यह स्थापित करने के लिए कि स्वदेशी उद्योग द्वारा उत्पादित एनिलीन, विषयगत देशों से निर्यातित एनिलीन के समान वस्तु है, विशेषताओं जैसे तकनीकी विनिर्देशों, उत्पादन पद्धति, संयंत्र एवं उपस्कर, टैक्नालॉजी, कार्य तथा प्रयोग, विपणन एवं उपभोक्त समझ एवं टैरिफ वर्गीकरण पर विचार किया गया है।

यह निर्विकार है कि स्वदेशी उद्योग द्वारा उत्पादित एनिलीन की विशेषताएँ आयातित उत्पाद से काफ़ल मिलती हैं और यह वाणिज्यिक तथा तकनीकी, दो ही दृष्टियों से, स्वदेशी उद्योग द्वारा उत्पादित एनिलीन को नियम 2(घ) के अंतर्गत, जापान एवं अमरीका से आयातित उत्पाद के समान वस्तु माना गया है ।

### छ स्वदेशी उद्योग

7. मै0 हिन्दुस्तान आर्गेनिक कैमिकल्स लि0 (एचओसीएल), मै0 नर्मदा चेमातुर पेट्रो कैमिकल्स लि0 (एनसीपीएल) तथा मै0 एनिरॉक्स पिगमेंट्स लि0 ने संयुक्त रूप से याचिका दी है । ये तीना इकाइयों - भारत में एनिलीन की एकमात्र उत्पाद हैं । अतः स्वदेशी उत्पादन का 100 % वादी कम्पनियों का है और इनके पास नियमों के अनुसार याचिका दायर करने का आधार है।

### 8. पाटन

धारा 9ए(1) के अंतर्गत किसी वस्तु के सामान्य मूल्य का अर्थ है - समान वस्तु के सामान्य व्यापार में तुलनीय मूल्य, जबकि वह वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में खपत निमित्त तैयार की गयी हो और जो उपधारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्धारित हो ; अथवा

जब निर्यातक देश या क्षेत्र के अपने स्वदेशी बाजार में व्यापार की सामान्य स्थिति में समान वस्तु की कोई खपत न होती हो अथवा विशिष्ट बाजार दशा या निर्यातक देश अथवा क्षेत्र के स्वदेशी बाजार में खपत की मात्रा काफी गिर जाए । तब ऐसी बिक्री से उचित तुलना न हो सकने की स्थिति में सामान्य मूल्य इनमें से कोई एक होगा-

समान वस्तु के तुलनात्मक मूल्य का निर्धारण उपधारा (6) के तहत बनाए गए नियमों के अनुसार ही किया जाए अगर समान वस्तु निर्यातक देश, क्षेत्र या किसी उचित अन्य तीसरे देश द्वारा निर्यात होकर पहुंची हो ; अथवा

प्रशासनिक, बिक्री या सामान्य लागत एवं लाभ के लिए उचित बढ़ोतरी सहित मूलतः देश में उक्त वस्तु के उत्पादन की लागत जो उपधारा (6) के अधीन बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित है ।



बशर्ते कि मूलता के देश के अलावा अन्य किसी देश से वस्तु के आयात के मामले में या वस्तु को निर्यातक देश के माध्यम से केवल भेजा गया हो या ऐसी वस्तु का निर्यातक देश में उत्पाद नहीं होता या निर्यातक देश में इसका कोई तुलनीय मूल्य नहीं है, इसके सामान्य मूल्य का मूल्य का निर्धारण, मूलतः के देश में इसके मूल्य के संदर्भ में किया जाएगा ।

प्राधिकारी ने ऊपर दी गई शर्तों के अनुसार विषयगत देश के निर्यातकों को प्रश्नावलियाँ भेजी केवल सुमितोमो कैमिकल लि० जापान ने प्रश्नावली का उत्तर दिया ।

अतः सामान्य मूल्य एवं निर्यात मूल्य के संबंध में अन्य विषयगत देशों के निर्यातकों द्वारा कोई दावे नहीं किये गए । अतः अमरीका के उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा प्रश्नावली में सूचना न देने को देखते हुए प्राधिकारी को, सामान्य मूल्य एवं निर्यात मूल्य के संबंध में वादी द्वारा दी गई सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना और उपलब्ध सरकारी आंकड़ों पर निर्भर रहना पड़ा है ।

### झ निर्यातकों द्वारा दावे

#### देश जापान

#### निर्यातकः सुमितोमो कैमिकल कम्पनी लिमिटेड

8. निर्यातक ने दावा किया है कि उन्होंने जाँच अवधि के दौरान एनिलिन के लगभग 268 मी.टन का निर्यात किया था । उक्त 268 मी.टनों में से 251.86 मी.टन का निर्यात मई, 1998 में तथा 16 मी.टन का निर्यात जून, 1998 में किया गया था । उन्होंने भारत में खरीदारों को अपने द्वारा किये गये उक्त निर्यातों के संबंधित बीजकों एवं लादान पत्रों की प्रतियाँ दी है । उनमें दिये गये सी आई एफ मूल्य 251.86 मी.टन एनिलीन के लिए \*\*\* अमरीकी डालर (सीआईएफ) तथा 16 मी.टन एनिलीन के \*\*\*अ.डा. है । दोनों के बीच मूल्यों में अंतर के लिए कहा गया है कि ये बेचे गए उत्पाद की क्वालिटी के कारण है ।

जाँच अवधि के दौरान उपरोक्त श्रेणियों में उनकी स्वदेशी बिक्रियों की कुल मात्रा और उनके इकाई मूल्यों का विस्तार उनके द्वारा दिया गया है । उन्होंने कहा है कि जाँच अवधि के दौरान उनकी स्वदेशी बिक्री की मात्रा और उनके मूल्य निम्नलिखित थे:

मात्रा(मी.टन)	मूल्य	
	येन	अ.डा.
***	***	***

ज. निर्यातकों के उत्तर एवं उपलब्ध सूचना के आधार पर प्राधिकारी द्वारा सामान्य मूल्य तथा निर्यात मूल्य की जाँच

§ 1§ सुमितोमो कैमिकल कम्पनी लि., जापान

सुमितोमो कैमिकल कम्पनी लिमिटेड द्वारा दिए गए उत्तर की जाँच करने पर पता चलता है कि संलग्नक 3ए, बी तथा सी में, जो स्वदेशी बिक्री तथा निर्यातों, दोनों के लिए मूल्य ढँचे एवं बिक्री प्रबंधों से संबंधित हैं, सूचना दी गयी है। फैक्टरी-एतर से आगे के स्तर के प्रमारों की प्रकृति एवं राशि बताते हुए, स्वदेशी एवं निर्यात बाजारों में समान वस्तु हेतु लिए गए मूल्य उपलब्ध हैं। तथापि, स्वदेशी बिक्री मूल्य दिखाते हुए सूचियों की या स्वदेशी बीजकों की प्रतियाँ नहीं दी गयी हैं। जबकि संलग्नक 4ए के अनुसार लाइसेंसशुदा/संस्थापित क्षमता, उत्पादन एवं बिक्री संबंधी सूचना दी गयी है, संलग्नक 4बी, सी तथा डी के अनुसार उत्पादन ईकाई की लागत, बनाने और बेचने पर लागत एवं स्वदेशी तथा निर्यात बाजारों में लाभ पर सूचना नहीं दी गयी है। निर्यातक द्वारा यह कहा गया है कि वे उत्पादन लागत के अंकड़े नहीं देना चाहेंगे क्योंकि यह अति संवदेनशील व्यापार भेद है। वित्तीय एवं लागत लेखा-पद्धति, लाभ निश्चयन एवं वित्तीय सूचना § व्यापार एवं लाभ तथा हानि लेखों की प्रतियाँ की पद्धति नहीं बताई और दी गयी है।

§ क§ सामान्य मूल्य

निर्यातकों § संलग्नक-2बी§ द्वारा दिए गए उत्तरों से यह देखा गया है कि जाँचाधीन उत्पाद की किलोग्रामों में स्वदेशी बिक्री एवं अ.डा. में उनके मूल्य निम्नलिखित के अनुसार हैं :-

उत्पाद

स्वदेशी बाजार में बिक्री

यूनिट§ कि.ग्रा. §

मूल्य § अ.डा. § येन

एनिलीन

\*\*\*

\*\*\*

\*\*\*

प्रति किलो ग्राम औसत मूल्य येन  $\times\times\times$  या अमरीकी डालर  $\times\times\times$ / कि.ग्रा. आता है ।

सूची मूल्य स्तर पर मूल्य येन  $\times\times\times$ / कि. ग्रा. है । स्वदेशी बिक्रियों हेतु बिक्री मूल्य ढाँचे में § संलग्नक 3 बो §, फैक्टरी-एतर के बाद प्रभारों के लिए मांगे गए समायोजनों में आंतरिक भाड़ा § येन  $\times\times\times$ / कि.ग्रा. §, भण्डारण § येन  $\times\times\times$ / कि.ग्रा. §, हैण्डलिंग §  $\times\times\times$ / कि.ग्रा. § शामिल हैं । फैक्टरी-एतर के बाद उपरोक्त प्रभारों के लिए कुल लागत येन  $\times\times\times$ / कि.ग्रा. आती है । प्राधिकारी ने भण्डारण लागत पर प्रभार को अस्वीकार किया है क्योंकि निर्यातों हेतु बिक्री मूल्य ढाँचे में उन्हें नहीं किया गया है । अतः कुल प्रभार ये  $\times\times\times$ / कि.ग्रा. आते हैं तथा एक अमरीकी डालर = येन 128.04 के औसत विनिमय दर पर फैक्टरी-एतर स्तर के मूल्य येन  $\times\times\times$ / कि.ग्रा. हैं । भुगतान शर्त § स्वदेशी बिक्री हेतु एवं निर्यातों के लिए व्यापारिक कम्पनियों से भुगतान के मामले में § के अंतर को हिसाब में लेते हुए इस मूल्य में समायोजन पर प्राधिकारी ने विलेखी सक्षय के अभाव में विचार नहीं किया है । यह नोट किया गया है कि यदि इस समायोजन को लिया भी जाता, तो भी अ.डा. में फैक्टरी-एतर मूल्य में कोई अंतर नहीं पड़ता जो अ.डा.  $\times\times\times$ /कि.ग्रा. होंगे ।

#### (ख) निर्यात मूल्य

-----

एससीसी के भारत को निर्यात बिक्री के सीआईएफ मूल्य 251.86 मी.टन हेतु  $\times\times\times$ अ.डा. तथा 16 मीटरिक टन के लिए  $\times\times\times$ अ.डा. थे । इन मूल्यों के आधार पर, भारत को निर्यातों हेतु मूल्य ढाँचे संलग्नक 3ए-1, 3ए-2 तथा 3ए-3 में तैयार किये गए हैं । संलग्नक 3-ए-1, एससीसी के मई में किये गए 251.86 मी.टन के आधार पर फैक्टरी-एतर स्तर पर मूल्य का आकलन दिखाता है जो येन  $\times\times\times$ /कि.ग्राम § सीआईएफ/सूचीबद्ध मूल्य,  $\times\times\times$  अ.डा. § हैं । संलग्नक 3-ए इन दो मूल्यों, जो येन  $\times\times\times$ /कि.ग्राम है तथा भारत औसत सूची मूल्य येन  $\times\times\times$ /कि.ग्राम के भारत औसत फैक्टरी-एतर मूल्य दिखाता है ।

भारत को निर्यातों हेतु बिक्री ढाँचे में सूची-बद्ध मूल्य जो 2 पोत लदानों का भारत औसत सूचीबद्ध मूल्य है, येन  $\times\times\times$ /कि.ग्राम है । येन  $\times\times\times$ /कि.ग्राम की छूट/कमीशन दिए जाते हैं । फैक्टरी-एतर के बाद तथा एफओबी से पहले प्रभारों में येन  $\times\times\times$ /कि.ग्राम की दर पर स्वदेशी भाड़ा शामिल है । बीमे के लिए येन  $\times\times\times$ /कि.ग्राम लिया गया है । यह कहा गया है कि भण्डारण, हैण्डलिंग, कर्ग, पैकिंग आदि के लिए कोई प्रभार नहीं है । एफ ओ बी के बाद प्रभार में येन  $\times\times\times$ /कि.ग्राम की दर से विदेशी भाड़ा, येन  $\times\times\times$ /कि.ग्राम की दर से विदेशी बीमा, येन  $\times\times\times$ /कि.ग्राम की दर से पोतलदान प्रभार तथा येन  $\times\times\times$ /कि.ग्राम की दर से छुड़वाई तथा हैण्डलिंग शामिल है । यह कहा गया है कि सीमा-शुल्क, बिक्री कर आदि के लिए कोई प्रभार नहीं है ।

यह देखा गया है कि 251.86 मी.टन की मात्रा का पोत-लदान बल्क में किया गया था और 16 मी.टन का पोत लदान ड्रमों में किया गया था। दोनों पोत लदानों के मूल्य में अंतर अ.डा. XXX/मीटरिक टन या अ.डा. XXX/किलो ग्राम था। येन XXX/कि.ग्राम पर पैकेजिंग की लागत को लेते हुए विभिन्न अवस्थाओं में कुल प्रभार इस प्रकार येन XXX है। उपरोक्त लागत को घटाकर फैक्टरीएतर स्तर पर निर्यात मूल्य येन XXX या अ. डा. XXX/कि.ग्राम आता है।

भारत के अलावा अन्य देशों को निर्यातों हेतु बिक्री मूल्य ढांचे में, सूची-बद्ध मूल्य येन  $\times\times\times$ /किलोग्राम है। दिए गए कमीशन/छूट शून्य है। फैक्टरीएतर के बाद तथा एफओबी से पहले प्रभारों में येन  $\times\times\times$ /कि.ग्राम पर केवल बीमा ही शामिल है। यह कहा गया है कि भण्डारण, हैंडलिंग, करों, पैकेजिंग आदि के लिए कोई प्रभार नहीं है।

एफओबी के बाद प्रभारों में येन  $\times\times\times$ /कि.ग्राम की दर से विदेशी भाड़ा, येन  $\times\times\times$ /कि.ग्राम की दर से विदेशी बीमा, येन  $\times\times\times$ /कि.ग्राम की दर से पोत लदान प्रभार शामिल हैं। यह कहा गया है कि सीमा-शुल्क, बिक्रीकर आदि के लिए कोई प्रभार नहीं है। पैकेजिंग की लागत को निकालकर विभिन्न अवस्थाओं में कुल प्रभार इस प्रकार येन  $\times\times\times$ /कि.ग्राम है। फैक्टरी एतद् स्तर पर निर्यात मूल्य येन  $\times\times\times$ /कि.ग्राम या अ.डा.  $\times\times\times$ /कि.ग्राम है।

§ 11 § अमरीका

§ क § सामान्य मूल्य

जैसा कि बी ए एस एफ कार्पोरेशन ने कहा है, जांच अवधि में किसी भी समय बी ए एस एफ कार्पोरेशन या एक बी ए एस एफ वितरक ने भारत को एनिलीन का निर्यात नहीं किया है। बेयर कार्पोरेशन ने जांच अवधि के दौरान एनिलीन का उत्पादन, निर्माण, बिक्री या निर्यात नहीं किया है। जबकि मे. ईआई डूपोण्ट दे नेमोअर्स कम्पनी ने अपने विचार एक पत्र द्वारा प्राधिकारी को दिए हैं, उन्होंने प्रश्नावली का औपचारिक उत्तर नहीं दिया है। निर्यात मूल्य पर उनका कथन किसी विलेखित साक्ष्य से पुष्ट नहीं है। अतः सामान्य मूल्य या निर्यात मूल्य का कोई साक्ष्य नहीं है।

वादियों ने शनैल पब्लिशिंग कम्पनी द्वारा 1871 से प्रकाशित "दि कैमिकल मार्केट रिपोर्टर" से साक्ष्य दिए हैं। यह पत्रिका अमरीका में रसायन उद्योग में भली प्रकार मान्यता प्राप्त पत्रिका कही जाती है। अमरीका के निर्यातकों द्वारा सूचना के अभाव में, प्राधिकारी को अमरीका के स्वदेशी बाजार में एनिलीन के वही मूल्य स्वीकार करने के लिए बाध्य होना पड़ा है जो उक्त पत्रिका में दिए गए हैं।

कैमिकल मार्केट रिपोर्ट के अनुसार, अमरीका में एनिलीन के मूल्य अ.डा. 0.49 से 0.50 प्रतिपौंड हैं जो अ.डा. 1080 प्रतिमीटरिक टन या रु. 1102 प्रति मी.टन § 1 मीटरिक टन = 2204.62 पाउण्ड § के बराबर हैं। इस प्रकार अमरीका में एनिलीन का सामान्य मूल्य अ.डा. 1091/मीटरिक टन § पत्रिका द्वारा दिए गए 2 मूल्यों का औसत §

माना जा सकता है। यह भी कहा गया है कि कैमिकल मार्केट रिपोर्टर द्वारा दिखाए गए एनिलीन के मूल्य एफओबी मूल्य हैं और इसलिए इसमें भाड़ा तथा परिवहन व्यय शामिल नहीं हैं।

§ ख § निर्यात मूल्य

-----

वादी ने अमरीका में निर्यात मूल्य का दावा, कण्डला बंदरगाह द्वारा प्रकाशित आंकड़ों के आधार पर किया है। वर्ष 1998-99 {अप्रैल-मार्च, 99} में निर्यात मूल्य, परिमाण एवं मूल्य {लाख में} पर आधारित हैं जो केवल उपरोक्त अवधि के लिए क्रमशः 5623.595 मीट्रिक टन तथा रु. \*\*\* थे। एक अ.डा. = रु. 42.3 की विनिमय दर पर सीआईएफ निर्यात मूल्य \*\*\*/मीट्रिक टन है।

उपरोक्त निर्यात मूल्य सीआईएफ मूल्य होने के कारण समुद्री भाड़े 1 %, निर्यात मूल्य के 0.5% के समुद्री बीमे, निर्यात मूल्य के 3% के कमीशन, स्वदेशी परिवहन -2%, पैकेजिंग -3% तथा बंदरगाह हैंडलिंग तथा बंदरगाह प्रभार-2% के लिए समायोजन मांगे गए हैं। इनको घटकर अमरीका से शुद्ध निर्यात मूल्य रु. \*\*\*/मी.टन या अ.डा. \*\*\*/कि.ग्राम होते हैं।

ट. पाटन मार्जिन

-----

क. सुमितोमो कैमिकल कम्पनी लि., जापान

-----

11. अमरीकी डॉलर\*\*\*/कि.ग्राम के फैक्ट्री-एतर सामान्य मूल्य तथा अ.डा. \*\*\*/कि.ग्राम. फैक्ट्री-एतर निर्यात मूल्य मानते हुए, प्राधिकारी द्वारा निश्चित पाटन मार्जिन अ.डा. \*\*\*/कि.ग्राम. {जो निर्यात मूल्य का 87.5% है} बनता है।

ख. अमरीका

-----

12. उपरोक्त प्रभारों के लिए समायोजनों के बाद अ.डा. \*\*\*/कि.ग्राम के सामान्य मूल्य एवं अ.डा. \*\*\*/कि.ग्राम. के शुद्ध एफओबी निर्यात मूल्य को मानते हुए, पाटन मार्जिन अ.डा. \*\*\*/कि.ग्राम. का आता है {जो निर्यात मूल्य का 131% है}।

ठ. क्षति

-----

13. पूर्वोक्त नियम 11 के अधीन, अनुलग्नक-1 के अनुसार जब क्षति का होना पता चलता है तो ऐसे जानकारी में स्वदेशी उद्योग को हुई क्षति निश्चित की जाती है। इस

कार्य में पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए स्वदेशी बाजार में मूल्यों पर उनका प्रभाव और समान वस्तु के स्वदेशी उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामतः प्रभावों से संबंधित सभी तथ्यों पर विचार किया जाता है। मूल्यों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते हुए यह जाँच करना आवश्यक समझा गया है कि क्या भारत में समान वस्तु के मूल्य की तुलना में, पाटित आयातों द्वारा पर्याप्त नीचा मूल्य है या ऐसे आयातों का प्रभाव, मूल्यों में वृद्धि को रोकने या मूल्यों को एक विशेष सीमा तक दबाने के लिए किया गया है, यदि ऐसा नहीं किया गया होता तो मूल्यों में महत्वपूर्ण स्तर तक वृद्धि होती।

1 पूर्वोक्त नियम II के अधीन अनुलग्नक II (III) में और आगे यह दिया गया है कि जहाँ एक देश से अधिक देशों से एक उत्पादन के आयात साथ-साथ पाटन-रोधी जाँच के अधीन हों तो नाम निर्दिष्ट प्राधिकारी, ऐसे आयातों के प्रभावों का संचित आकलन तब ही करेगा जबकि यह निश्चित करता है कि प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में स्थापित पाटन मार्जिन दो प्रतिशत से अधिक है और निर्यात मूल्य की प्रतिशतता के रूप में व्यक्त किया गया है तथा प्रत्येक देश से निर्यातों की मात्रा, समान वस्तुओं के आयातों का तीन प्रतिशत या अलग अलग देशों का निर्यात तीन प्रतिशत से कम है, संचित रूप से आयात, समान वस्तु के आयातों के सात प्रतिशत से अधिक होते हैं तथा आयातित वस्तु एवं समान स्वदेशी वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की दशाओं के प्रकाश में आयातों के प्रभाव का संचित आकलन उचित है।

अधिकारी ने नोट किया है कि पाटन का मार्जिन तथा विषयगत देश से आयातों की मात्रा, ऊपर निर्धारित की गई सीमाओं से अधिक है।

भारत में स्वदेशी उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जाँच करने के लिए अधिकारी ने ऐसे और संकेतकों पर विचार किया है जो उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालते हैं जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्रियों की मात्रा, स्टॉक, लाभकारिता, शुद्ध बिक्री प्राप्ति, पाटन का घनत्व एवं मार्जिन आदि। यह पूर्ववर्ती नियम के अनुलग्नक -II (iv) के अनुसार होंगे।

#### (क) आयातों की मात्रा

एनिलीन के कुल आयात 96-97, 97-98 तथा 98-99 में क्रमशः 1277 मी.टन, 5847 मी.टन तथा 8038.804 मी.टन (कान्दला बन्दरगाह के मार्च, 99 तक के आँकड़ों से यथा प्राप्त) थे। इस प्रकार 96-97 के ऊपर 1997-98 में वृद्धि 357 प्रतिशत तथा 97-98 के ऊपर 98-99 में वृद्धि 37.48 थी। वर्ष 96-97 के ऊपर 1998-99 में वृद्धि 529 प्रतिशत थी। इस प्रकार आयातों की मात्रा में जाँच अवधि के दौरान भारी वृद्धि हुई है।

जापान से आयातों की मात्रा 1996-97, 97-98 तथा 98-99 के दौरान क्रमशः 983 मी.टन 5251 मी.टन तथा 901.209 मी.टन (सरकारी तथा कान्दला बन्दरगाह के मार्च, 99 तक उपलब्ध आँकड़ों से यथा प्राप्त) थी । इस प्रकार आयात 96-97 के ऊपर 1997-98 में 434 प्रतिशत बढ़े तथा 97-98 के ऊपर 98-99 में 477 प्रतिशत गिरे । वर्ष 96-97 के ऊपर 98-99 में गिरावट 9 प्रतिशत की थी ।

अमरीका से आयातों की मात्रा 97-98 तथा 98-99 के दौरान क्रमशः 47 मी.टन, 5623.595 मी.टन (सरकारी तथा कान्दला बन्दगाह के मार्च, 99 तक उपलब्ध आँकड़ों से यथा प्राप्त) थी । वर्ष 1996-97 तक कोई आयात नहीं थे । इस प्रकार 1997-98 के ऊपर 1998-99 में आयातों में भारी वृद्धि हुई ।

अन्य देशों से आयातों की मात्रा 96-97, 97-98 तथा 1998-99 में क्रमशः 57 मी.टन, 297 मी.टन तथा 1514 मी.टन थी । कुल आयातों में जापान की हिस्सेदारी 96-97, 97-98 तथा 98-99 में क्रमशः 76.97 प्रतिशत, 89.90 प्रतिशत तथा 11.21 प्रतिशत थी । कुल आयातों में अमरीका की हिस्सेदारी 1997-98 में 0.80 प्रतिशत तथा 1998-99 में 69.96 प्रतिशत थी ।

#### (ख) उत्पादन एवं क्षमता उपयोग

यह देखा गया है कि वादी कम्पनियों (अर्थात् एच ओ सी एल, एन सी पी एल तथा एनिर्शेक्स पिगमेण्ट्स) की उत्पादन क्षमता, उत्पादन एवं क्षमता उपयोग निम्नलिखित के अनुसार थे:-

वर्ष	क्षमता (मी.टन)	उत्पादन (मी.टन)	क्षमता उपयोग प्रतिशत
1996-97	48100	39165	81.42
1997-98	48500	47254	97.43
जाँच अवधि-			
98-99	54100	41780	77.23

एच ओ सी एल का क्षमता उपयोग 96-97 तथा 97-98 में क्रमशः 89.18 प्रतिशत तथा 98.48 प्रतिशत है । जाँच अवधि के दौरान यह 87.42 प्रतिशत था । एच ओ सी एल के संयंत्र के रख-रखाव में सुधार किया गया और संस्थापित क्षमता को पहले के 97-98 के 24500 टन प्रति वर्ष से पुनः निश्चित कर 98-99 में 25,100 टन प्रतिवर्ष का किया गया । एन सी पी एल का क्षमता उपयोग 1995-97 (18 महीनों में) 107.45 प्रतिशत तथा 97-98 में 100.72 प्रतिशत था ।

अवरोधों को दूर करने और ₹ 120.00 लाख की लागत से संयंत्र क्षमता को 25 प्रतिशत बढ़ाने के लिए एन पी सी एल के संयंत्र को दुरुस्त करने हेतु एक विस्तृत अध्ययन अक्टूबर, 1997 से अप्रैल, 1998 में किया गया था। उससे संयंत्र की क्षमता 20,000 मी.टन के पिछले स्तर से बढ़ाकर 98.99 में 25000 मी.टन कर दी गई थी। जाँच अवधि के दौरान एन पी सी एल का क्षमता उपयोग 69.58 प्रतिशत था। एनिरॉक्स पिगमेण्ट्स का क्षमता उपयोग 96-97 तथा 97-98 में क्रमशः 88.02 प्रतिशत तथा 74.55 प्रतिशत एवं जाँच अवधि के दौरान 61 प्रतिशत। यह देखा गया है कि वादी कम्पनियों का सम्मिलित क्षमता उपयोग 97-98 के 97.43 प्रतिशत से घटकर जाँच अवधि के दौरान 77.23 प्रतिशत हो गया। स्वदेशी उद्योग ने 1996-97 में 156 मी.टन, 1997-98 में 3111 मी.टन तथा 1998-99 में 1543 मी.टन का निर्यात किया था। उत्पादन से निर्यातित मात्रा घटा देने के बाद, स्थानीय बिक्री के लिए मात्रा 1996-97 में 39009 मी.टन, 1997-98 में 44143 मी.टन तथा 1998-99 में 40237 मी.टन रहती है। अतः स्वदेशी बिक्री के लिए उत्पादन घटा है, यद्यपि संस्थापित क्षमता 96-97 की 48100 से बढ़कर 97-98 में 48500 एवं 98-99 में 54100 हो गई है।

एक उत्पाद के तौर पर, एनिलीन उपयोग विशिष्ट है। भारत में एनिलीन मुख्यतः रंजक, रबड़ रसायन और औषध तथा औषध मध्यक उत्पादन क्षेत्रों की आवश्यकताओं को पूरा करता है। वादियों ने कहा है कि 1996 में, गुजरात प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड (जी पी सी बी) ने ऐसे अनेक रंजक उत्पादक यूनिटों को बंद करने के आदेश दे दिए थे जिनके पास बहिः-स्राव उपचार संयंत्र (ई टी पी) थे किन्तु जो बहिः-स्राव के उपचार में होने वाले खर्च के कारण उनको सही तरीके से नहीं चला रहे थे। यह स्थिति केवल थोड़े समय के लिए ही रही जिसके बाद इन यूनिटों द्वारा बहिः-स्राव के उपचार की सुविधाएँ चलाई जाने लगीं। 1997-98 तथा 1998-99 में एनिलीन की माँग सामान्य रही। तथापि, स्वदेशी उद्योग की बिक्री की मात्रा एवं उच्च क्षमता उपयोग को, जाँच अवधि के दौरान नीची कीमतों पर बड़ी मात्रा में किए गए पाटन के कारण धक्का लगा। अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसायी द्वारा, जिसकी अपनी ही क्षमता 60,000 टन प्रतिवर्ष से अधिक की थी, उत्पाद के काफी नीचे मूल्य पर पाटन से एनिलीन के स्वदेशी मूल्य टूट गए। स्वदेशी उद्योग के उत्पादन में 5474 मी.टन की कमी आ गई। विषयगत देशों से आयात 6524.804 मी०टन (अकेले कान्दला बन्दगाह पर) के थे।

#### (ग) विपणन तथा बाज़ार हिस्सेदारी

यह देखा गया है कि एनिलीन की माँग 96-97, 97-98 तथा 98-99 में क्रमशः 37,106 मी.टन, 44,220 मी.टन तथा 43,860.804 मी.टन (आयात के



ऑकड़े मार्च, 99 तक के डीजीसीआईएस ऑकड़ों तथा कान्दला बन्दरगाह ऑकड़ों पर आधारित) के थे। कुल माँग में आयातों की हिस्सेदारी 96-97, 97-98 तथा 98-99 में क्रमशः 3.4 प्रतिशत, 13.22 प्रतिशत तथा 18.33 प्रतिशत थी। वादी कम्पनियों की हिस्सेदारी 96-97, 97-98 तथा 98-99 में क्रमशः 96.56 प्रतिशत, 86.77 प्रतिशत तथा 81.61 प्रतिशत थी। इस प्रकार कुल माँग में आयातों की हिस्सेदारी बढ़ रही है जबकि भारतीय उद्योग की हिस्सेदारी गिरती रही है। यद्यपि निर्यात मात्रा निकाल देने के बाद स्वदेशी उद्योग द्वारा स्थानीय बिक्री के लिए किए गए उत्पादन की मात्रा 1996-97 में 39009 मी.टन, 1997-98 में 44143 मी.टन तथा 1998-99 में 40237 मी.टन थी, यह देखा गया कि स्वदेशी उद्योग की बिक्रियाँ 1996-97, 1997-98 तथा 1998-99 में 35,919 मी.टन, 38,373 मी.टन तथा 35822 मी.टन पर निम्नतर थी। रुपयों में वादियों के प्रति मीट्रिक टन बिक्री मूल्य वर्ष 96-97, 97-98 तथा 98-99 एवं जाँच अवधि (अप्रैल 98-मार्च 99) हेतु क्रमशः \*\*\*, \*\*\*, \*\*\* थे।

### (घ) अन्तिम स्टॉक

यह देखा गया है कि वादियों के अन्तिम स्टॉक 96-97, 97-98 तथा जाँच अवधि के दौरान क्रमशः 446.419 मी.टन, 2226.814 मी.टन तथा 2252.454 मी.टन थे। यह देखा गया है कि एच ओ सी एल द्वारा 1996-97, 97-98 तथा 98-99 के दौरान क्रमशः 194 मी.टन, 1478 मी.टन 1548 मी.टन; एन सी पी एल द्वारा 34.119 मी.टन, 710.314 मी.टन तथा 654.094 मी.टन एवं एनिरॉक्स द्वारा क्रमशः वर्षों में 218 मी.टन, 38.5 तथा 50.36 मी.टन माल रखा गया था।

### (ङ) मूल्य अण्डरकटिंग तथा मूल्य अवसादन

वादी कम्पनियों ने कहा है कि विषयगत देशों से किए गए आयात स्वदेशी उद्योग द्वारा बेचे जा रहे एनिलीन के मूल्यों की अण्डरकटिंग कर रहे हैं। निर्यातकों के उत्तरों से यह देखा गया है कि जापान से एनिलीन का मूल्य (सी आई एफ) अ.डा. \*\*\*/मी.टन या रू0 \*\*\*/मी.टन तथा अमरीका से अ.डा. \*\*\*/मी.टन या रू0 \*\*\*/मी.टन था। उपरोक्त मूल्य जाँच अवधि के दौरान वादियों के उत्पादन की ईकाई (मी.टन) लागत से नीचे थे जो क्रमशः एच ओ सी एल, एन सी पी एल तथा एनिरॉक्स पिग्मेण्ट्स के लिए \*\*\*/मी.टन, \*\*\*/मी.टन तथा \*\*\*/मी.टन थी। विषयगत देशों से आयातों ने भारतीय बाजार में एनिलीन की कीमतों को और दबा दिया है और वादियों की हानि की है। वर्ष 1996-97 में एनिलीन की औसत प्राप्ति रू. \*\*\*/मी.टन थी जो 97-98 में बढ़कर रू. \*\*\*/मी.टन एवं जाँच अवधि के दौरान गिर कर रू. \*\*\*/मी.टन हो गई थी। तथापि, यह देखा गया कि हैं कि विभिन्न

उत्पादन भिन्न मूल्य ले रहे हैं तथा विभिन्न कम्पनियों के लाभ/हानियों में अन्तर है । वर्ष 1998-99 में एच ओ सी एल, एन सी पी एल एवं एनिरॉक्स पिगमेंट्स द्वारा लिए जा रहे औसत बिक्री मूल्य क्रमशः रु. \*\*\*/मी.टन, रु.\*\*\*/मी.टन तथा रु.\*\*\*/मी.टन थे । इस मूल्य स्तर पर जाँच अवधि में एच ओ सी एल को रु. 816.87 लाख, एन पी सी एल को रु. 1175.51 लाख तथा एनिरॉक्स पिगमेण्ट्स की रु.82.75 लाख की हानियाँ हुई ।

#### ड. क्षति पर निष्कर्ष

14. पूर्वोक्त को देखते हुए यह पाया गया है कि:-

- क) विषयगत देशों से आयातों की मात्रा नितान्त अर्थों में बढ़ी है;
  - ख) वादी कम्पनियों की बाजार हिस्सेदारी कम हो गई है;
  - ग) आयात, स्वदेशी उद्योग के मूल्यों की अण्डरकटिंग कर रहे हैं;
  - घ) स्वदेशी उद्योग को उन मूल्यों पर बिक्री के लिए बाध्य होना पड़ा है जिसपर उसे हानि हुई है ;
  - ङ) स्वदेशी उद्योग का अन्तिम स्टॉक बढ़ गया है ।
- अतः प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि स्वदेशी उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है ।

#### ढ. कारणात्मक सम्बन्ध

15. यह नोट किया गया है कि एनिलीन की माँग में कोई परिवर्तन नहीं आया है । स्वदेशी उद्योग का उत्पादन पाटित आयातों के कारण धीमा हो गया है जिससे स्वदेशी मूल्य अवसादित हुए । जैसाकि कैमिकल इन्फार्मेशन सर्विसेज इन्का द्वारा अपने कैमिकल प्रोफाइल, ता. 8 फरवरी, 1999 में रिपोर्ट किया गया है कि विश्व में एनिलीन के प्रमुख उत्पादकों की सम्मिलित क्षमता प्रतिवर्ष 1.37 बिलियन पाउंड की है । वर्ष 2002 हेतु माँग का अनुमान 1.9 बिलियन पाउंड की है । विश्व बाजार एम डी आई पर बहुत अधिक आश्रित है जो एनिलीन के विश्व उत्पादन के 80-85 प्रतिशत का उपभोग कर लेता है, विशेष रूप से अमरीका में और यह निर्माण, उपस्कर तथा ऑटोमोटिव संघटकों में कठोर फोम बाजारों में प्रयुक्त होता है । भारत में एनिलीन के बिक्री केन्द्र ज्यादातर केवल रबड़ रसायनों, रंजकों और औषध एवं औषध मध्यकों तक ही सीमित है । प्राधिकारी नोट करता है कि विश्व के प्रमुख उत्पादकों द्वारा पाटित मूल्यों पर निर्यातों की मामूली मात्रा, सीमित माँग ढाँचे एवं पाटित मूल्यों से मुकाबला करने में स्वदेशी उद्योग की असमर्थता के कारण, भारतीय उद्योग को प्रभावित कर सकती है ।

प्राधिकारी नोट करता है कि भारत में एनिलीन की माँग में कोई बड़ा उतार-चढ़ाव नहीं आया है। स्वदेशी उद्योग, विश्व में एनिलीन के सबसे छोटे उत्पादकों में से है और भारतीय उद्योग की क्षमता एनिलीन की माँग को पूरा करने के लिए पर्याप्त है। एनिलीन की विश्व कीमतों में 1998-99 में भारी गिरावट आई और इसका प्रभाव उन कीमतों पर पड़ा जिस पर इनका भारत में आयात किया गया था। इसका प्रभाव एनिलीन के स्वदेशी उत्पादकों के कार्यों एवं लाभकारिता पर पड़ा क्योंकि जाँच अविध के दौरान प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय उत्पादकों द्वारा एनिलीन का पाटन किया गया था।

यह स्थापित करने के लिए विषयगत देशों से आयातों से स्वदेशी उद्योग को आर्थिक हानि हुई है, प्राधिकारी का मानना है कि जापान एवं अमरीका से आयातों की बाजार हिस्सेदारी में वृद्धि के परिणामस्वरूप वादी की बाजार हिस्सेदारी में गिरावट आई है। एनिलीन के उत्पादन के लिए आवश्यक निवेशों/कच्चे माल के मूल्यों में वृद्धि के कारण स्वदेशी उद्योग, आयातित उत्पाद के लैण्डिड मूल्य का मुकाबला नहीं कर सका। पेट्रोलियम, ईंधन तेल तथा बेंजीन के मूल्यों में 1996 से मजबूती आनी शुरू हुई थी। विषयगत देशों से आयातों ने स्वदेशी उत्पाद के मूल्यों की अण्डरकटिंग की और स्वदेशी उद्योग को अलाकाशी मूल्यों पर बिक्री करने के लिए विवश किया। परिणामस्वरूप स्वदेशी उद्योग को हानि हुई। अतः स्वदेशी उद्योग को आर्थिक क्षति, उक्त देशों से पाटित आयातों के कारण हुई थी।

#### ण. भारतीय उद्योग का हित एवं अन्य मुद्दे

16. पाटनरोधी सीमाशुल्कों का प्रयोजन सामान्यतः पाटन को खत्म करना है जो स्वदेशी उद्योग को क्षति पहुंचा रहा है और भारतीय बाजार में एक मुक्त एवं उचित प्रतिस्पर्द्धा की स्थिति को पुनर्स्थापित करना है जो देश के सामान्य हित में है।

17. यह मानी हुई बात है कि पाटनरोधी सीमाशुल्कों का लगाया जाना, विषयगत माल का प्रयोग करते हुए बने उत्पादों के मूल्य स्तरों को प्रभावित कर सकता है तथा परिणामतया इन उत्पादों की संबंधित प्रतिस्पर्द्धिता पर कुछ प्रभाव डाल सकता है। तथापि, भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्द्धा, पाटनरोधी उपायों से कम नहीं होगी विशेष रूप से जबकि पाटनरोधी सीमा शुल्क की लेवी को उस राशि तक प्रतिबंधित रखा जाता है जहाँ तक स्वदेशी उद्योग को हुई क्षति की पूर्ति होती है। इसके विपरीत पाटनरोधी उपाय लगाने से, पाटनरोधी ढंगों से प्राप्त होने वाले अनुचित लाभों को रोका जा सकेगा, यह स्वदेशी उद्योग की गिरावट को रोक देगा

और एनिलीन के उपभोक्ताओं को अधिक किस्में उपलब्ध कराने में मदद देगा । पाटनरोधी उपाय लगाना किसी भी प्रकार से विषयगत देशों से आयातों को नहीं रोकेंगा और इसलिए उपभोक्ताओं को उत्पाद की उपलब्धता को प्रभावित नहीं करेगा ।

18. स्वदेशी उद्योग की क्षति को समाप्त करने के लिए आवश्यक पाटनरोधी सीमा-शुल्क की सीमा का पता लगाने हेतु, अधिकारी ने स्वदेशी उद्योग के लिए भारत में एनिलीन के उचित बिक्री मूल्य पर भरोसा किया है । यह स्वदेशी उद्योग के लिए क्षमता उपयोग के अधिकतम स्तर पर उत्पादन की अधिकतम लागत पर विचार करते हुए किया गया है ।

#### त. लैण्डिड मूल्य

19. आयातों के लैण्डिड मूल्य का निश्चयन एनिलीन के निर्यात मूल्य के आधार पर किया गया है । यह सीमाशुल्कों के वर्तमान स्तर तथा एक प्रतिशत लैण्डिड और दो प्रतिशत हैण्डलिंग खर्चों को जोड़कर पाटन से संबंधित उपरोक्त पैरे में दिए गए विवरण के आधार पर किया गया है ।

#### थ. निष्कर्ष

20 पूर्वोक्त पर विचार करने के पश्चात् यह देखा गया है कि:-  
 क) जापान एवं अमरीका मूल के या वहां से निर्यातित तथा पैरा 5 में वर्णित एनिलीन का निर्यात भारत को सामान्य मूल्य से नीचे पर किया गया है जिसके परिणामस्वरूप पाटन हुआ है ,  
 ख) भारतीय उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है,  
 ग) विषयगत देशों से आयातों से क्षति हुई है ।

21. और आगे जाँच होने तक विषयगत देशों के मूल के या वहाँ से आयातित एनिलीन के सभी आयातों पर, अन्तिम निश्चयन होने तक, अनन्तिम तौर पर सीमाशुल्क लगाना आवश्यक समझा गया है ।

22. पाटन के मार्जिन या उससे कम के बराबर पाटन-रोधी शुल्क लगाने का निश्चय किया गया था, जो यदि लगाया जाता है तो स्वदेशी उद्योग को हुई क्षति को समाप्त कर देगा । जाँच अवधि के लिए निश्चित, स्वदेशी उद्योग के उचित बिक्री मूल्य के साथ आयातों के लैण्डिड मूल्य की तुलना की गई । तदनुसार, अन्तिम निश्चयन होने तक, सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम के सीमा शुल्क उप-शीर्ष 2921.41 के अन्तर्गत आने वाले तथा जापान एवं अमरीका मूल के या वहाँ से निर्यातित एनिलीन पर, केन्द्रीय सरकार द्वारा इस सम्बन्ध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से, अन्तिम पाटन-रोधी शुल्क लगाने का प्रस्ताव है । पाटन-रोधी शुल्क कॉलम 3 में दी गई राशि का होगा:

देश	उत्पादक/निर्यातक का नाम	राशि
1	2	3(रु.)/कि.ग्रा.
जापान	(क) सुमितोमो कैमिकल कं० लि.	3.43
	(ख) मित्सुई एंड कं. तथा अन्य सभी	6.25
अमरीका	(क) मै० ई.आई.ड्रूपोण्ट के नेमाउर्स एण्ड कं.	7.88
	(ख) अन्य सभी	7.88

द. भावी पद्धति

23. आरम्भिक निष्कर्षों को अधिसूचित किए जाने के बाद निम्नलिखित पद्धति अपनाई जाएगी:

प्राधिकारी इन निष्कर्षों पर सभी हितबद्ध पार्टियों से उनके विचार आमन्त्रित करेगा और अन्तिम निष्कर्षों में उन्हें ध्यान में रखा जाएगा ।

ज्ञात सम्बद्ध निर्यातकों, आयातकों, वादी तथा अन्य हितबद्ध पार्टियों को प्राधिकारी द्वारा अलग से लिखा जा रहा है जो, इस अधिसूचना के भेजे जाने के चालीस दिनों के भीतर अपने विचार जता सकते हैं । अन्य कोई हितबद्ध पार्टी भी, इन निष्कर्षों के प्रकाशन की तारीख से चालीस दिनों के भीतर अपने विचार दे सकती है । प्राधिकारी सभी पार्टियों को मौखिक अभिवेदन करने का अवसर प्रदान करेगा ।

प्राधिकारी अन्तिम निष्कर्षों की घोषणा से पहले आवश्यक तथ्य उद्घाटित करेगा ।

**MINISTRY OF COMMERCE****NOTIFICATION**

New Delhi, the 8th March, 2000

**Subject:— Anti-Dumping investigation concerning imports of Aniline from Japan and the USA--- Preliminary Findings.**

21/1/98/DGAD.— Having regard to the Customs Tariff (Amendment) Act 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury), Rules, 1995, thereof:

**A. PROCEDURE**

1. The procedure given below has been followed with regard to the investigations:

i) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, received a written petition from M/s Hindustan Organic Chemicals Ltd. (HOCL), M/s Narmada Chematur Petro Chemicals Ltd. (NCPL), and M/s Anirox Pigments Ltd., alleging dumping of Aniline originating in or exported from Japan and the USA.

ii) The preliminary scrutiny of the application revealed certain deficiencies, which were subsequently rectified by the petitioner. The petition was therefore considered as properly documented.

iii) The Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the Petitioner decided to initiate investigations against alleged dumped imports of Aniline originating in or exported from Japan and the USA. The Authority notified the Embassies of the subject countries about the receipt of dumping allegation before proceeding to initiate investigations in accordance with sub rule 5(5) of the Rules;

iv) The Authority issued a Public Notice dated 13<sup>th</sup> September, 1999, published in the Gazette of India Extraordinary initiating anti-dumping investigations concerning imports of Aniline classified under Chapter-29 customs sub-heading no. 2921.41 of the Customs Tariff Act, 1975, originating in or exported from the said countries.

v) The Authority forwarded a copy of the Public Notice to the known exporters (whose details were made available by the Petitioner) and industry associations and gave them an opportunity to make their views known in writing within forty days from the date of the letter;

vi) The Authority forwarded a copy of the Public Notice to the known importers ( whose details were made available by the petitioner) of acrylic fibre and advised them to make their views known in writing within forty days from the date of the letter;

vii) Request was made to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) to arrange details of imports of Aniline:

viii) The Authority provided copies of the Petition to the known exporters and the Embassies of the subject countries in accordance with Rule 6(3) supra;

ix) The Authority sent a questionnaire, to elicit relevant information to the following known exporters, from the subject

countries, in accordance with Rule 6(4);

**Japan**

Sumitomo Chemical Company Limited

27-1, Shinkawa 2-Chome

Chuo-ku, Tokyo 104-8260

Mitsui & Co. Ltd.

C.P.O. Box 822

2-1 Ohtemachi, 1-chome

Chiyoda-Ku, Tokyo 100-91.

**USA**

Bayer Corpn.

100 Bayer Road,

Pittsburgh,

PA 15205-9741,

BASF Corpn.

3000-Continental Drive North,

Mount Olive, NJ 07828-1234.

Dupont

1007 Market Street,

Wilmington,

DE 19898.

Responses were received from the following exporters:

- Sumitomo Chemical Company Ltd, Japan, who responded to the questionnaire forwarded by the Authority.
- Bayer Corporation, Pittsburgh
- BASF Corporation, Mount Olive, New Jersey
- M/s E.I.DuPont de Nemours & Co, Delaware 19898, USA



x) The Embassies of the subject countries were informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6(2) with a request to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter, petition and questionnaire sent to the exporters was also sent to them, alongwith a list of known exporters/producers.

xi) A questionnaire was sent to the following known importers of acrylic fibre in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4);

- C.J.Shah & Co
- Haresh Kumar & Co
- Priya International
- Gujarat Dyestuff Industries, Baroda
- Navin Chemical Enterprises, Agra
- ICI India Ltd, Calcutta
- Anar Chemical Industries, Ahmedabad
- NOCIL, Thane
- Ganesh Chemical Industries, Mumbai
- Indo Colchem Ltd, Ahmedabad
- Ind. Solvents & Chem.P.Ltd, Bharuch
- Sahyadri Dyestuff & Chemicals, Pune
- Mardia Chemicals Ltd, Ahmedabad
- J.K.Pharma, Ahmedabad
- Dintex Dyechem Ltd., Ahmedabad
- Metrochem Industries Ltd., Ahmedabad
- Cyanides & Chemicals Co. Surat
- Color Chem Ltd, Thane
- Bayer India Ltd., Thane
- Jaysynth Dyechem Ltd., Mumbai
- Gayatri Intermediates (P) Ltd, Ahmedabad.
- The Dyestuff Manufacturers Association of India, Mumbai

- Indian Chemical Manufacturers Association, Mumbai
- Indian Drugs Manufacturers Association, Mumbai

Responses were received from the following:

- Gayatri Intermediates Pvt.Ltd.
- Bayer India Limited.
- ICI India Ltd
- Metrochem Industries Ltd.
- Colour-Chem Limited
- The Gujarat Dyestuffs Manufacturer' Association
- Indian Chemical Manufacturers Association
- Cyanides & Chemicals Co
- Mardia Chemicals Ltd.
- Industrial Solvents & Chemicals Ltd.

xii) Some of the interested parties requested for extension of time to submit the responses, which was, upon good cause shown, allowed by the Authority.

xiii) The Authority made available the non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.

xiv) Cost investigations were also conducted to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the Petitioner.

xv)\*\*\* in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;

xvi) Investigations were carried out for the period starting from 1st April, 1998 to 31<sup>st</sup> March, 1999.

## B. PETITIONERS VIEWS

2. The Petitioner has raised the following major issues in their petition and subsequent submissions:-

(i) The three petitioners are the only producers of Aniline in India. Their production since 1996-97 has been as given below:-

Name of Company	Production (MT)		
	1996-97	1997-98	1998-99
a) HOCL	21849	24128	21943
b) NCPL	*21490	20144	17397
c) Anirox	2989	2982	2440

\* Production by NCPL is for 1995-97(18 months).

The petitioner companies account for 100% of the total Indian production and therefore satisfy the standing to file the present petition.

(ii) The main raw materials used to produce Aniline are Benzene, Hydrogen and concentrated Nitric Acid. All the petitioners produce nitrobenzene which is an intermediate for production of Aniline. Nitrobenzene is produced by the nitration of Benzene. Aniline is produced by the catalytic reduction of Nitrobenzene with hydrogen.

(iii) The majority of producers in the world use direct hydrogenation of Nitrobenzene route to produce Aniline. Every manufacturer however may have different operating conditions depending on available facilities. Aniline produced by the petitioners is of international standard and there is no difference whatsoever in the quality of the product manufactured by the

petitioners and that imported which can have an impact on price. Both are used interchangeably.

(iv) Aniline can be manufactured by ammonolysis of phenol. This process is used only by M/s Mitsui Petro Chem.of Japan, Steel Chemicals,USA, and M/s Aristec, USA. The variable cost by this process is higher by about 10% compared with that of direct hydrogenation.

(v) NCPL and HOCL are exporting Aniline to a number of countries in the world. Most of the quantity in the domestic as well as export market is sold in bulk. In the case of NCPL only 2% of the sale is in drum packing. HOCL sells only 3% of the Aniline in drums for export. The drumming cost (cost of drum and labour) is approximately Rs \*\*\*/- per MT or USD \*\*\* per MT. For sale in bulk there is no packaging cost since they are transported through road tankers. All import in India is in bulk.

(vi) NCPL had exported only 16MT to UK in the year 1996-97 at USD 748/MT fob and 48MT to Turkey in 1997-98 at USD 864/MT fob. In 1998-99 NCPL exported 16MT to Turkey at USD 910/MT fob. These exports were in drum packing. Other two manufacturers did not export to either Turkey or UK.

(vii) There is no significant change in the demand for Aniline in India. The changes in demand have, therefore, not contributed to any injury to the domestic industry. The price variation of Aniline is directly related to the international price and the pricing is influenced generally by market forces because of cheaper import and as such there is no demand supply gap.

(viii) The consumption pattern of Aniline in India is different from that of the world market where 80% of the product is used to manufacture MDI. In India Aniline is used for rubber chemicals, pharmaceuticals, dye intermediates and photographic chemicals.

(ix) The imports from the subject countries have increased significantly in absolute terms. The import information in respect of 1998-99 is as per information compiled from Kandla port. Though Aniline is largely imported at Kandla the actual volume of imports is bound to be higher than Kandla volumes. The market share of Japan in the total imports of Aniline increased to 89.80% in 1997-98 from 76.79% in 96-97. Imports of Aniline from the USA have also increased significantly from 47MT in 1997-98 to 5623.595MT in 1998-99. The cumulative imports from the subject countries have thus accounted for more than 81.16% of imports of Aniline into India as evident from the available data.

x) The domestic industry has lost substantial sales in 1998-99. The sales volume of the domestic industry declined by 2551MT whereas imports increased by 2192MT(approx.). The sales lost by the domestic industry are the sales gained by the exporters from Japan and the USA.

(xi) The claim of material injury to the domestic industry from the dumped imports is based on the following factors:

- a) Increase in imports from the subject countries in absolute terms;
- b) Increase in market share of imports and decline in market share of domestic industry;
- c) Decline in domestic industry production;
- d) Decline in sales volume of domestic industry;
- e) Decline in selling prices;
- f) Decline in profitability.

### **C. 3. VIEWS OF EXPORTERS, IMPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES**

#### **I Importers Views**

**(1)Gayatri Intermediates Pvt.Ltd.**

1. As a manufacturer exporter, to be competitive in the export market, the cheapest raw material is required to be sourced. In spite of various schemes introduced by the Government to enable the exporter to procure material from local manufacturers, HOC and NCPL have time and again refused to supply material under ARO.
2. The petitioners do not have any consistent policy on pricing. The threat of imports forces them to keep their pricing competitive. They have a duty protection of 38.5% + SAD. The material imported has been more expensive as compared with that supplied by local producers and the quality of service rendered by international suppliers is much superior.
3. In case of levy of anti-dumping duty, India stands to lose a major portion of the export market for products manufactured from the product under investigation. The total imports for the period under investigation is not more than 6000MT compared to the domestic production of about 40000MT from the petitioners.

## **(2) Metrochem Industries Ltd.**

1. This respondent is a major manufacturer and exporter of dyestuff and dye-intermediates and consumes huge quantities of Aniline as raw material for their products.
2. Domestic Industry- The petitioners are the three producers of Aniline. HOCL and NCPL are the two main producers while Anirox contributes to hardly 5% of the total production of Aniline. HOCL has been a producer of Aniline for 25 years but their capacity has been stagnant at 12,000 tons per annum till 1993-94. NCPL commenced production in 1994-95 when their actual output was hardly 4353MT. Its full production of 20,000TPA was not achieved even in 1996-97.
3. Demand- Aniline is used by various chemical industries for production of Vinyl Sulphone, Aceto Acetanilide, Sulphanilic acid, Sulphamethoxazole, Nigrosinc etc and rubber chemicals. Aniline

enjoyed tariff protection identical to downstream products which is unjustified and unfair. With the total demand of 40,000 to 45,000 tons per annum, the available capacity is utilised almost fully and any disturbance will jeopardise the supply situation and serve as bottlenecks for various industries.

4. Imports-As per market sources, imports of Aniline have been in the range of 4000 to 5000 tons during the last two years and 15,000 to 20,000 Mt during 1993-95 due to the supply demand gap. Therefore, imports steadily went down due to increase in domestic production.

5. The counter argument made by domestic manufacturers regarding losses to them because of international supplies is not true. The domestic producers have been achieving their normal capacity utilisation at reasonable levels and production is much below the total demand for the product. Further, domestic manufacturers are manufacturing several products and any losses registered by them need not be from any single product only. Profits have eroded due to high depreciation involved and delays in implementing the projects for expansion or diversification.

6. The worldwide production of Aniline is to the tune of 2 million tons per annum and the plant sizes achieve economies of scale because of high production levels. ICI, Dupont, Mitsui, BASF and First Chemical Corpn are some of the major producers.

7. The main products from Aniline is Diphenyl Methane Discyanate (DMI) and the usage of MDI is linked to growth in construction and automobile sectors. Any demand fluctuations in construction and automobile sectors results in rise and fall of prices. Thus some manufacturers have enhanced their capacity in view of rise in demand for MDI and therefore the supply has increased drastically.

8. The prices of Aniline have dropped only for a short period ~~and~~ the prices are actually rising in the international market. Currently , the international prices are USD600/MT

9. Instead of seeking protection by way of imposition of anti-

dumping duty, domestic manufacturers should take advantage of low capital costs, automation and captive production of Nitric Acid and Hydrogen. The stated facts show that no protection should be provided to the domestic industry. They should concentrate on matching their costs with international costs and take effective steps toward enhanced efficiency and productivity.

### **(3) The Gujarat Dyestuffs Manufacturers' Association**

1. The Association has a membership strength of more than 725 units in the small scale sector located in the state of Gujarat engaged in the manufacture and export of Dyes and Dye Intermediates.
2. Aniline has always enjoyed tariff protection identical to the rates applicable to downstream products which is patently unjust.
3. The present requirement of the Aniline consuming industry is 40000 TPA to 45000 TPA. At this level of demand, domestic capacities are fully utilized and any change, upsets or disruption could cause supply bottlenecks. Import is effected for filling the demand/supply gap in the domestic market.
4. Initiation of anti-dumping investigations will result in price rise for these industries and make it difficult to compete with countries like China, Korea and Indonesia.
5. Globally, the major consumption of Aniline is for MDI which is used for Polyurethane. When the demand for MDI is good, prices of Aniline go up and when demand is poor, prices go down.
6. The basic raw material for Aniline is Benzene, which attracts only 16.5% import duty and helps manufacturers of Aniline to bring down their cost. Aniline, in fact, should fall in the same category being one of the basic raw materials for dye stuff and dye intermediates, bulk drugs, rubber chemicals etc.
7. In the recent past, international prices of Aniline have gone down (i.e. below USD 500/MT) on account of global recession, poor demand of MDI and economic crises in Asian countries. The situation has since improved with prevailing prices around USD



600/MT which shows that global prices of Aniline are market driven and have nothing to do with dumping.

8. All Indian companies have run their plants at reasonably good production levels. In a situation where the producers elsewhere in the world were compelled to reduce their production drastically, Indian manufacturers were comfortable due to high duty protection by the government.

9. As the international market prices have gone up, domestic producers have also increased the local prices by more than 15% in the past four months.

10. The members of this Association as users of Aniline are having a hard-earned market share in the export market. If further protection is provided to Aniline manufacturers in India, this export business which earns value added foreign exchange would be taken away by other countries.

#### **(4) Cyanides & Chemicals Company**

1. During 1995-96 and 1996-97, imports have taken place in the range of Rs 23,000 to Rs 24,000/MT. During 1997-98 imports were effected at higher prices because the prices of material had firmed up in the international market. Prices of Aniline have again fallen and hence imports may have taken place at around Rs 23,000/MT during 1998-99.

2. Aniline is being imported in liquid form packed in 200ltr drums and stuffed in container load or the same is being imported as loose cargo. Loose cargo of Aniline has been arriving at Kandla port whereas Aniline packed in drums is being imported at Mumbai port. The price of such drum packaging and container freight is at around 200 to 250 USD higher as compared to that of loose cargo. The petitioners contention that imports from countries alleged to be dumping are at lower prices and imports from other countries are at higher prices are not correct if prices are compared keeping the packaging aspect in view. Due adjustments have to be given in respect of packaging while comparing import prices from

alleged dumped sources and from other sources to arrive at a true picture.

3. It has been observed that at Kandla port traffic congestion always remains high delaying clearance of goods and leading to high demurrage which normally works out to around 10% of cif import price. This apart around 6% of cif price is being spent on account of storage, L/c opening and bank charges, handling, clearing and forwarding charges, wharfage etc. In case of Aniline packed in drums such higher charges are not more than 3%. In order to arrive at the comparable price of imports from the alleged countries stated to be dumping and from other countries, due adjustments for all the above is necessary prior to concluding that imports from other countries have taken place at higher prices.

4. Details of country, volume and value of imports and exports during the last two years and in the current year to-date made by the petitioners is required to be submitted to the Authority.

In the non-confidential version of the petition however, the petitioners have very tactfully avoided data for the previous two years in case of imports and have stated that none of the petitioners have imported aniline in 1998-99. While the answer has been given for the year 1998-99, nothing has been stated for the past two years. The petitioners have in the past imported aniline. This respondent had purchased imported material from M/s HOCL in 1994-95.

5. The domestic industry had produced 39165Mt in 1996-97, 47254Mt in 1997-98 and 41781Mt in 1998-99. They had exported 156Mt in 1996-97, 3111Mt in 1997-98 and 1543Mt in 1998-99. After reduction of the exported quantity from the production, the quantity for local sales works out to be 39009Mt in 1996-97, 44143Mt in 1997-98 and 40238 Mt in 1998-99. As such there was no reduction in production for domestic sales.

6. Normal value in the subject countries has been considered based on trade journals/magazines which provide rough idea about price. Vast difference in price is observed between prices indicated

in journals/magazines and material sold in domestic market.

7. The total installed capacity of the domestic industry for the year 1996-97 should be 48100 and 48500 for 1997-98. The average capacity utilisation works out to 81.42% and 97.43% respectively. The average capacity utilisation of NCPL during 1998-99 works out to 86.99% and not 69.59% as NCPL capacity (licensed and installed) in the year 1998-99 was 20000MT and not 25000MT as specified in the non-confidential version of the petition. Additional 25% capacity utilisation cannot be achieved by way of revamping or modification. Enhancement in capacity might have been during year end of 1998-99.

8. Data regarding inventory has not been provided.

9. Increase in import duty on Aniline will trigger off increase in prices of drugs, pharmaceuticals, dyes, rubber chemicals, etc. which will have an adverse effect on exports.

10. The petitioners are exporting the subject goods at prices much lower than domestic prices that have been artificially maintained at a level much higher than the international prices.

**(5) M/s ICI India Ltd.**

1. This respondent is a subsidiary of Imperial Chemical Industries Plc. of U.K. It is a trading and manufacturing company engaged in the manufacture of rubber chemicals amongst other products. Aniline is not imported by them for the manufacture of rubber chemicals.

2. Regarding sales in India for the product in question, they had a contract with HOCL and NCPL for Aniline during the reference period.

**(6) Bayer India Ltd.**

1. BIL has not directly imported any Aniline during the last three years viz from April 1996 to March 1999. BIL has only purchased 98.21MT of Aniline from the trade during Oct-Dec

1998 at Rs 42.30/kg inclusive of CVD, 4% CST, transportation and transit insurance. The country of origin of this material was Japan.

2. BIL has fully supported the local manufacturers for its purchases of Aniline and had utilised all advance licences for local purchases under Advance Release Order (ARO) or Advance Intermediate Licence.

3. In spite of very attractive international prices of Aniline in the last twelve months, BIL has not resorted to imports and has fully supported the local manufacturers for their purchases of Aniline.

### **(7) Indian Chemical Manufacturers Association**

1. In a meeting comprising both consumers and producers of Aniline, it was stated by HOCL that during the last three years there has been an increase in the imports of Aniline resulting in decrease in the capacity utilisation of the domestic producer from 87% to 78%. While the domestic industry is not against exports they expect a level playing field. The international prices from USA/Japan have dropped by 20% in two years. The normal prices of Aniline are about USD 1000/ton in USA and about USD 1600/ton in Japan. However, Aniline is being exported from these countries to the Indian market at prices around USD 500/ton which clearly establishes dumping.

2. The consumers stated that the quality of Aniline produced in India is of international standard. Most of the dye and dye intermediate manufacturers in the country are procuring Aniline from domestic producers of Aniline. Export of dyes and dye intermediates derived from Aniline are to the tune of Rs 500 crore.

3. Aniline content in dye intermediates such as Vinyl Sulphone is about 50% of the total cost of production. Export prices of Vinyl Sulphone, which was around USD 4/kg earlier has now come down to USD 1.8/kg due to severe international competition and therefore, any further increase in Aniline prices will directly affect the viability of exports of dye intermediates such as Vinyl

### **Sulphone.**

4. In the case of rubber chemicals, four out of every six rubber chemicals are based on Aniline. While rubber chemicals can be imported in small volumes, Aniline imports are not economical unless imported in large parcel loads. In fact imported prices are already higher than indigenous prices and zero imports are taking place today.

5. Speciality intermediate producers (Dimethyl Aniline) stated that their imports are against exports. They cannot purchase Aniline at domestic rates since they do not get DEPB for exports. Buying at ARO rates for export production entails sales tax of 12%-15% making exports of their products unremunerative.

6. The capacity utilisation of the domestic industry seems to have dropped mainly because the producers are taking increased installed capacity of 5000 MT by NCPL. Based on installed capacity of 1997-98 the capacity utilisation has dropped only marginally.

7. The information regarding current prices of Aniline given by the petitioners (around USD 1000 to 1500 per ton) appear to be spot prices for retail supply in the USA and Japan. If these were real prices HOC could have exported and got much higher realisation from Aniline exports than from domestic sales.

8. The capacity utilisation for Aniline has come down from 87% to 78% but for dye intermediates it has come down much lower. As regards prices, against 20% reduction in domestic Aniline prices the Vinyl Sulphone prices have come down by more than 50% from USD 4 to USD 1.8 in the same two years period.

### **(8) Clariant/Colour-Chem**

1. HOCL and NCPL are the two major producers of Aniline. The production by the third manufacturer M/s Anirox Pigments Ltd. (formerly known as Dhanbad Chemicals Ltd.) is basically for captive consumption and their total output would not exceed 5% of the total domestic production of Aniline.

2. Cheaper sources of Aniline would be preferred as it would enable Indian producers of downstream products to combat the imports of the same products from China.
3. There are as many as fourteen Aniline manufacturers worldwide producing total quantity of 1.8 million tons. Typically plant sizes are 60000 TPA and above with benefits of economies of scale.
4. While most of the Aniline is produced through Nitrobenzene route, Phenol also is the starting material in some processes and accordingly, there could be at times difference in cost economics.
5. Price variation of Aniline is a natural outcome of cyclical/seasonal demand. This is further influenced by market forces resulting in demand-supply gaps.
6. The unusual decline in the prices of Aniline took place only in one quarter of 1998. Such a stray incidence should not be the basis for a blanket protection against futuristic alleged cheaper imports of Aniline.
7. Any special protection to local producers will only tempt them to exploit the situation and consumers are apprehensive that prices of Aniline would then be unusually high as was the case 10 years ago when HOCL enjoyed a monopoly situation.

**(9) Mardia Chemicals Ltd.**

1. Aniline Oil is the most important raw material for Dyes and Dye intermediates like Vinyl Sulphone which is a highly export oriented product. The cost of Aniline alone in this product is more than 50% of the total raw material cost.
2. If anti-dumping duty is imposed, domestic manufactures will increase their prices by which exports of VS and VS based dyes will be seriously affected. The country's export earning will be affected to the tune of 500 to 700 crores.
3. The small scale industries are involved in the manufacture of Aniline based dyes and dye intermediates. If for the benefit of domestic producers anti-dumping duty is imposed these industries

would be closed and lacs of people would be rendered jobless.

4. As claimed by them international prices in Japan for their domestic consumption is USD 1500/Mt and in USA around USD 1100/Mt/. Domestic producers should have resorted to exports. The fact that HOC exported a consignment that was below USD 500 and some material at around USD 300-400/MT reflects the international prices.

5. The petitioners have also mentioned that they had exported to UK at USD 3099/MT and to Turkey at 4589/MT and their average export realisation was USD 971/MT. If Aniline is available all over the world at USD 500/MT it is unbelievable that UK would import at 3099/MT from India.

6. The total exports by HOCL in 1998-99 was 567 MT and that by NCPL was 976 MT. The total exports by India was thus 1543 tonnes out of the total production of 41781 Mt in 1998-99. The exported quantity was thus around 3.7% only of the total production. If in the USA and Japan, prices were high as claimed by the petitioners, they should have exported more quantities.

#### **(10) Industrial Solvents and Chemicals Ltd.**

1. Aniline Oil is a critical raw material for various industries. It constitutes 75% of the raw material cost in the manufacture of the finished products of this respondent viz., N,N Dimethyl Aniline, N-Methyl Aniline, N,N -Dimethyl Aniline, Ethyl Benzyl Aniline which are Alkalytised Aniline compounds.

2. Although capacity is large, the plant is operating at 40% capacity on account of low demand in local in international markets and cheap imports from China and Europe.

3. Aniline manufacturers in India are operating their plants close to 80% of their capacity and therefore it is felt that they are quite efficient in terms of capacity utilisation.

## **II Exporters Views**

### **(1). BASF**

At no time during the period of investigation (i.e. April 1, 1998 to March 31, 1999) has BASF Corporation or a BASF distributor exported any Aniline to India.

### **(2) Bayer Corporation**

To the best of its knowledge, Bayer Corporation has not produced, manufactured, sold or exported Aniline within the relevant time period of April 1, 1998 through March 31, 1999. Thus the investigation is not applicable to Bayer Corporation.

### **(3) M/s E.I. duPont de Nemours & Co.**

1. The major domestic producers of Aniline have capacity less than 25000 tons per annum while typical plant size globally is minimum 50000 tons per annum and above to justify the economy of scale and be in the reckoning as a competitive manufacturer of Aniline. With lower capacities the cost of manufacturing will be higher compared to the installed capacity of an average plant elsewhere in the world. DuPont's production capacity of Aniline is 150,000 TPA.
2. Aniline producers in India already enjoy an advantage by way of duty protection. Aniline is a basic raw material used by a host of industries. In spite of being a basic organic chemical, Aniline had always enjoyed duty protection at the same level as downstream industries. The basic raw material for Aniline, that is, Benzene, attracts a tariff of only 16.5% providing additional benefit and duty protection to the domestic producers.
3. Aniline is a basic raw material produced from benzene. The process of production of aniline is as follows:-

<b>Nitration</b>	<b>Reduction</b>
Benzene→Nitrobenzene→Aniline	



The international market price of benzene during the period under investigation, ranged between USD 160 and USD 200PMT. However, when nitration is done the production of Nitrobenzene gets enhanced to 1.35 to 1.40 times. The cost of raw material for producing Aniline in an efficient world scale plant would not exceed USD 350 PMT. This clearly demonstrates that the average cost of production of Aniline by producers in USA or anywhere else in the world is lower than the export price to India, reckoned on a cost + freight basis.

4. The global demand for Aniline is driven by MDI (Diphenyl Methane Disocyanate) which is used for polyurethane rigid forms. The growth of the market for MDI is linked to growth in the construction sector and the automobile sector and these two sectors had experienced a major slow-down globally in the year 1998-99 due to the far-eastern crisis and its ripple effect was felt world-wide. This was one of the major reasons for excess availability of Aniline for supplies to other markets. This however did not have any impact on the import of Aniline during the period under investigation.

5. The imports of Aniline have always been necessitated for bridging the demand-supply gap in the domestic market. From the published data and market information, imports of Aniline have been as under:

1996-97	1277 MT
1997-98	5847MT
1998-99	5000MT

The capacity utilisation of the major domestic producers have been 87% each thereby indicating no abnormal increase in the imports of Aniline into India.

6. The global prices of Aniline dropped significantly in 1998-99 due to recession in the demand of MDI, which had direct impact on the global prices of Aniline. Prices offered for imports in India were in line with the prevalent international prices.

7. Since the year 1996-97 and until the current year, Aniline prices had ranged between USD \*\*\* to USD \*\*\* PMT and temporarily dropped during the third and fourth quarter of 1998. The prices have again undergone correction in the first quarter of 1999 and have reached the normal level by the second quarter of 1999. Published prices cannot be relied upon since they do not reflect the actual transaction prices with bulk customers in the domestic market which are much lower and this information for reasons of confidentiality is never disclosed.

8. The price offered by DuPont during the period under investigation was in the range of USD \*\*\* PMT with USD \*\*\* PMT being the lowest thus clearly indicating the fall in global prices worldwide. Even at the lowest price, after taking into account the duty and other miscellaneous expenses, the imported price works out to Rs \*\*\*/kg. The domestic producers have sold Aniline at around Rs \*\*\*/kg during the same period though they could have commanded some premium on account of their being the domestic producers besides being capable of supplying smaller volumes at short notices. The fact that they have sold Aniline at such low prices shows that the domestic producers were themselves resorting to undercutting.

9. The material injury, if any, has been on account of faulty marketing strategy of the domestic producers to gain maximum market share. The international prices of the basic raw material i.e. benzene and Aniline has risen from early 1999. However, the domestic producers announced the increase in the price of their products only on 1<sup>st</sup> July 1999, that is, virtually six months later which clearly indicates their competitive intensity in the local market.

#### **(4) Sumitomo Chemical Company,Ltd.**

1. SCC exported about 268MT of Aniline, through the trading companies in Japan, to India during the period April 1998 to March 1999 which accounts for only 2.9% of the total import to

India for the above-mentioned period.

2. Out of the said 268 MT, 251.86 MT was exported in May 1998 and 16 MT was exported in June 1998, respectively. Since then, SCC has never exported Aniline to India and has no immediate plan to export the said product to India.

3. Judging from the magnitude of their export to India in terms of quantity, the causal relationship between SCC's export and the alleged injury to the domestic industry in India should be de minimis.

4. SCC's price is far higher than the import price of Aniline originating from other Japanese exporters. It is also far higher than the USA origin product. In terms of price there is no sufficient evidence to prove the causal relationship between SCC's export and the alleged injury to the domestic Aniline industry in India.

5. The Aniline price cited in the Japan Chemical Week is used in "Part III Evidence of Dumping". However, the data listed in this newspaper is divorced from the actual price of Aniline in the ordinary course of trade in Japan. This exporter has traced the Aniline price listed in Japan Chemical Week back to January of 1996 and found that the price listed had never been revised for at least more than three years. This shows that the said price cannot be an evidence to determine the normal value.

6. SCC sells more than 60,000MT of Aniline in Japan. This should be the basis for the Normal Value in this case.

#### **D. EXAMINATION OF THE ISSUES RAISED**

4. The foregoing submissions made by the petitioner, exporters, importers and other interested parties, to the extent these are relevant as per Rules and to the extent these have a bearing upon the case, have been examined and considered and have been dealt with at appropriate places in these findings.

## **E. PRODUCT UNDER INVESTIGATION**

5. The product under consideration in the present investigation is Aniline also known as Aniline oil. Aniline is a transparent, oily, colourless to pale yellow liquid when freshly distilled. It darkens on exposure to light or air. Aniline is a primary amine compound and a basic organic chemical essential for vital industries such as drugs, pharmaceuticals, dyes and dye intermediates. Aniline is also used in some other industries such as rubber chemicals, explosives, resins etc.

Aniline is an intermediate for Rubber Chemicals (vulcanization, accelerators, antioxidants), Dyes, Drugs such as analgin, sulpha drugs, Photographic chemicals (hydroquinone), Isocyanates (MDI or Methylene Diphenylene Di-Isocyanate). In India, 70% of the production of Aniline is used in rubber chemicals, drugs and drug intermediates and dye industries, whereas 80% of production of Aniline world-over is used in MDI.

Aniline is classified under Chapter 29 of the Customs Tariff Act, 1975, under custom sub-heading no. 2921.41. The classification is however indicative only and in no way binding on the scope of the present investigations.

## **F. LIKE ARTICLES**

6. Aniline is produced and sold in specifications as per ISI standards which depict the properties of the chemical. The quality of Aniline is described in terms of its purity. The standard quality of Aniline normally contains 99.8% purity by weight. There is however no significant difference in terms of process, equipment or technology for the production of aniline.

In order to establish that Aniline produced by the domestic industry is a Like Article to Aniline exported from the subject countries, characteristics such as technical specifications, manufacturing process, plant and equipment, technology, functions

and uses, marketing and customer perception and tariff classification have been considered.

There is no argument disputing that Aniline produced by the domestic industry has characteristics closely resembling the imported product and is substitutable by the aniline imported from the subject countries both commercially and technically. Aniline produced by the domestic industry has been treated as Like Article to the product exported from Japan and the USA, within the meaning of Rule 2(d).

## **G. DOMESTIC INDUSTRY**

7. M/s Hindustan Organic Chemicals Ltd. (HOCL), M/s Narmada Chematur Petro Chemicals Ltd. (NCPL), and M/s Anirox Pigments Ltd., have jointly filed the petition. These three units are the only producers of Aniline in India. The petitioner companies therefore account for 100% of domestic production and have the required standing to file the petition under the Rules.

## **H. DUMPING**

8. Under Section 9A(1), normal value in relation to an article means:

The comparable price in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either:

comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third

country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

the cost of production of the said article in the country of origin alongwith reasonable addition for administrative, selling and general costs and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6);

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transshipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

The Authority sent questionnaires to the exporters from the subject countries in terms of the section cited above. Only Sumitomo Chemical Company Ltd., Japan, responded to the questionnaire.

Therefore there are no claims by the exporters from the other subject country with regard to normal value and export price. In view of the non-submission of information to the questionnaire by producers/exporters from the USA, the Authority has been constrained to rely upon best available information with regard to normal value and export price as provided by the petitioner.

## **I. CLAIMS OF THE EXPORTERS**

**Country: Japan**

**Exporter: Sumitomo Chemical Company Ltd.**

9. The exporter has claimed that they have exported about 268 MT of Aniline during the period of investigation. Out of the said 268 MT, 251.86 MT was exported in May 1998 and 16 MT was exported in June 1998. They have submitted copies of the relevant invoices and

bills of lading for the said exports made by them to buyers in India during the period investigated. The cif prices indicated therein is \*\*\* (cif) USD for 251.86MT of Aniline and \*\*\* USD for 16MT of Aniline. The price difference between the two, it is stated, is attributable to the quantity of the product sold.

Details of their total quantum of domestic sales in the above grades during the period investigated and the range of unit prices thereof have been submitted by them. They have stated that their quantum of domestic sales during the period of investigation and prices thereof were as follows:-

Quantity (MT)	Value	US\$
***	Y ***	***

## **J. EXAMINATION OF NORMAL VALUE AND EXPORT PRICE BY THE AUTHORITY BASED ON EXPORTERS RESPONSE AND AVAILABLE INFORMATION.**

### **(i) Sumitomo Chemical Company Ltd., Japan**

The examination of the response by Sumitomo Chemical Company Ltd., shows that information against Appendices 3A, B and C, which concerns price structures and sales arrangements for both domestic sales and for exports has been filed. Details on unit prices charged for like goods sold on domestic and export markets indicating the details of the nature and amount of charges beyond ex-factory level are available. However, copies of price lists or domestic invoices showing domestic sales prices have not been submitted. While information on licensed/installed capacity, production and sales as per Appendix 4A has been provided, the information on cost of production/unit cost to make and sell and profit in domestic and export markets as per Appendices 4 B,C and D has not been furnished. It is stated by the exporter that they would like to refrain from submitting the data on

manufacturing cost since it is a highly sensitive trade secret. Methods used in the financial and cost accounting system, profit determination and financial information (copies of trading and profit and loss accounts) have not been stated and submitted.

#### (A) Normal Value

From the response filed by the exporter (Appendix 2B), it is seen that domestic sales of the product under investigation in terms of KG and value thereof in terms of USD were as follows:-

<u>Product</u>	<u>Sales in domestic market</u>		Y
	<u>Unit(kg)</u>	<u>Value(\$)</u>	
Aniline	***	***	***

The average price per kg works out to Y\*\*\* or USD \*\*\*/kg.

The price at list price level is Y\*\*\*/kg. In the sales price structure for domestic sales (Appendix 3B), adjustments claimed on account of charges after ex-factory include inland freight (Y\*\*\*/kg), storage(Y\*\*\*/kg), handling(\*\*\*/kg). The total cost on account of the aforementioned charges after ex-factory comes to Y\*\*\*/kg. The Authority has disallowed the charge on storage costs as the same are not incurred on the sales price structure for exports. Hence the total charges come to Y\*\*\*/kg and the price at ex-factory level is Y\*\*\*/kg or USD \*\*\*/kg at an average exchange rate of 1USD=Y128.04. The adjustment to this price taking into account the difference of the payment term (for domestic sales and in the case of payment from the trading company for exports) is not considered by the Authority for want of documentary evidence. It is noted that even if this adjustment was to be considered it would make no difference to the ex-factory price in USD terms which would be USD \*\*\*/kg.

#### (B) Export Price

SCC's cif price of export sales to India is \*\*\*USD for 251.86MT and \*\*\*USD for 16 MT. Based on these prices, the sales price structure



for exports to India have been prepared in Appendix 3A-1, 3A-2 and 3A-3. Appendix 3A1 shows the calculation of price at ex-factory level based on SCC's export in May of 251.86 MT, which is Y\*\*\* /kg (cif/listed price, \*\*\*USD). Appendix 3A-2 shows the calculation of price at ex-factory level based on the export of 16MT in June which is Y \*\*\* /kg (cif/listed price, \*\*\*USD). Appendix 3A-3 shows the weighted average ex-factory price of these two prices, which is Y \*\*\* /kg and the weighted average list price of Y\*\*\* /kg.

In the sales price structure for exports to India, the listed price which is a weighted average listed price of the two shipments is Y\*\*\* /kg. Discounts/commissions are offered at Y\*\*\* /kg. Charges after ex-factory and before fob include inland freight @Y\*\*\* /kg. Insurance has been charged at Y\*\*\* /kg. It is stated that there are no charges on account of storage, handling, taxes, packaging etc. Charges after fob include that of overseas freight @ Y\*\*\* /kg, overseas insurance @ Y\*\*\* /kg, shipping charge @ Y\*\*\* /kg and clearance & handling @Y\*\*\* /kg. It is stated that there are no charges on account of duty, sales tax, etc.

It is seen that the quantity of 251.86 MT was shipped in bulk and 16Mt was shipped in drums. The difference in prices between the two shipments is USD \*\*\* /MT or USD \*\*\* /kg. The total charges at different stages taking cost of packaging at Y\*\*\* /kg is thus Y\*\*\*. After deducting the costs above, the export price at ex-factory level comes to Y\*\*\* or USD \*\*\* /kg.

In the sales price structure for exports to countries other than India, the listed price is Y\*\*\* /kg. Discounts/commissions offered are nil. Charges after ex-factory and before fob include only insurance at Y\*\*\* /kg. It is stated that there are no charges on account of storage, handling, taxes, packaging etc. Charges after fob include that of overseas freight @ Y\*\*\* /kg, overseas insurance @ Y\*\*\* /kg, shipping charge @ Y\*\*\* /kg and clearance & handling @Y\*\*\* /kg. It is stated that there are no charges on account of duty, sales tax, etc. The total

charges at different stages excluding cost of packaging is thus Y\*\*\* /kg. The export price at ex-factory level is Y\*\*\* /kg or USD \*\*\* /kg.

**(ii) USA**

**(A) Normal value**

As stated by BASF Corporation, at no time during the period of investigation has BASF Corporation or a BASF distributor exported any Aniline to India. Bayer Corporation has not produced, manufactured, sold or exported Aniline during the period of investigation. While M/s E.I. duPont de Nemours & Co. have addressed their views in a letter to the Authority, they have not given a formal response to the questionnaire. Their statement on export price is not substantiated by any documentary evidence. Hence there is no evidence of normal value or export price.

The petitioners have submitted evidence from 'The Chemical Market Reporter' published by Schnell Publishing Company since 1871 that is stated to be a well recognized journal in the chemicals industry in the USA. The Authority in view of lack of information from the exporters in the USA has been constrained to adopt the normal value of aniline in the domestic market in the USA as evidenced by the prices stated in the said journal.

According to the Chemical Market Reporter, the price of Aniline in USA is USD 0.49 to 0.50 per lb.(Pound) which is equivalent to USD 1080 per MT of Rs.1102 per MT (1 MT=2204.62 Pounds). The normal value of Aniline in the USA can thus be considered as USD 1091 pmt (average of the two prices reported by the journal). It is also stated that the price of Aniline shown by the Chemical Market Reporter is FOB price and is therefore not inclusive of freight and transportation.

**(B) Export Price**

The petitioner has claimed export price in the USA based on the data published by Kandla Port. The export price in 1998-99 (April-

March'99) is based on volume and value (in lacs) which were 5623.595MT and Rs \*\*\* respectively for the aforesaid period only. The cif export price is \*\*\*/MT at an exchange rate of 1USD=Rs.42.3.

The above export price being cif price, adjustments have been claimed (based on petitioners own exports) on account of ocean freight –1%; marine insurance – 0.5% of export price; commission – 3% of export price; inland transportation – 2%; packaging-3% and port handling and port charges – 2%.

The net export price from the USA after deducting these is Rs\*\*\*/MT or USD \*\*\*/kg.

## **K. DUMPING MARGIN**

### **A. Sumitomo Chemical Company, Ltd. Japan.**

11.Considering the ex-factory normal value at USD \*\*\*/kg and the ex-factory export price at USD \*\*\*/kg, the dumping margin determined by the Authority comes to USD \*\*\*/kg (which is 87.5% of export price).

### **B. USA**

12.Considering the normal value at USD \*\*\*/kg and the net fob export price at USD \*\*\*/kg after adjustments on account of the charges listed above, the dumping margin comes to USD \*\*\*/kg (which is 131% of export price).

## **L. INJURY**

13.Under Rule 11 supra, Annexure-II, when a finding of injury is arrived at, such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry, "taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such article..." In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine

whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

Annexure II(iii) under rule 11 supra further provides that in case where imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti-dumping investigation, the Designated Authority will cumulatively assess the effect of such imports, only when it determines that the margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two per cent expressed as a percentage of export price and the volume of the imports from each country is three per cent of the imports of the like article or where the export of the individual countries is less than three per cent, the imports cumulatively account for more than seven per cent of the imports of the like article, and cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic article.

The Authority notes that the margin of dumping and quantum of imports from the subject countries are more than the limits prescribed above.

For the examination of the impact of imports on the domestic industry in India, the Authority has considered such further indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilisation, quantum of sales, stock, profitability, net sales realisation, the magnitude and margin of dumping etc. in accordance with Annexure II(iv) of the rules supra.

#### **(a) Quantum of Imports**

The total imports of aniline were 1277Mt, 5847Mt and 8038.804Mt during 96-97, 97-98 and 98-99 (as available from official and Kandla

port statistics upto March'99). Thus the increase was 357% in 1997-98 over 96-97 and 37.48% in 98-99 over 97-98. The increase was 529% in 98-99 over 96-97. Thus the quantum of imports have gone up significantly during the period of investigation.

The quantum of imports from Japan were 983 Mt, 5251 Mt and 901.209 Mt during 1996-97, 97-98 and 98-99 (as available in official and Kandla port statistics upto March'99) respectively. Thus imports increased by 434% in 97-98 over 96-97 and declined by 477% in 98-99 over 97-98. The decline was by 9% in 98-99 over 96-97.

The quantum of imports from USA were 47 Mt and 5623.595Mt in 97-98 and 98-99 (as available in official and Kandla port statistics upto March'99) respectively. There were no imports till 1996-97. Thus imports increased tremendously in 1998-99 over that of 1997-98.

The quantum of imports from other countries was 57 Mt, 297 Mt and 1514Mt in 96-97, 97-98 and 1998-99. The share of Japan in total imports was 76.97%, 89.80% and 11.21% in 96-97, 97-98 and 98-99 respectively. The share of USA in total imports were 0.80% in 1997-98 and 69.96% in 1998-99.

#### **(b) Production and Capacity Utilisation**

It is observed that the production capacity, production and capacity utilisation of the petitioner companies (viz., HOCL, NCPL and Anirox Pigments) were as under:

Year	Capacity (MT)	Production (MT)	Capacity Utilisation %
1996-97	48100	39165	81.42
1997-98	48500	47254	97.43
POI-98-99	54100	41780	77.23

The capacity utilisation of HOCL was 89.18%, and 98.48% in 96-97 and 97-98 respectively. During the POI it was 87.42%. The maintenance of the HOCL plant was improved and the installed capacity was rerated as 25100TPA in 98-99 from the earlier level of 24500TPA in 97-98. The capacity utilisation of NCPL was 107.45% during 1995-97 (18 months) and 100.72% in 97-98. A detailed study to revamp the NCPL plant was carried out during October 1997 to April 1998 for debottlenecking and increase in the plant capacity by 25% at a nominal cost of Rs 120.00 lacs. The plant capacity was thereby increased to 25000Mt in 98-99 from the previous level of 20,000Mt. The capacity utilisation of NCPL was 69.58% in the POI. The capacity utilisation of Anirox Pigments was 83.02% and 74.55% in 96-97 and 97-98 and 61% in the POI. It is seen that the combined capacity utilisation of the petitioner companies has declined from 97.43% in 97-98 to 77.23% in the POI. The domestic industry had exported 156Mt in 1996-97, 3111Mt in 1997-98 and 1543Mt in 1998-99. After reduction of the exported quantity from the production, the quantity for local sales works out to be 39009Mt in 1996-97, 44143Mt in 1997-98 and 40237 Mt in 1998-99. Production for domestic sales has therefore declined although installed capacity increased from 48100 in 96-97 to 48500 in 97-98 and to 54100 in 98-99.

As a product, aniline is application specific. In India, Aniline caters mainly to the requirements of the dye, rubber chemicals and drugs and drug intermediates manufacturing sectors. The petitioners have stated that in 1996, the Gujarat Pollution Control Board (GPCB) ordered the closure of many of the dye manufacturing units who were in possession of Effluent Treatment Plants(ETP) but were not operating the same correctly because of the cost involved in the treatment of effluents. This situation continued only for a brief period after which the ET facilities were put into operation by these units. In 1997-98 and 1998-99, the demand for Aniline remained normal. However, the sales volume

and high capacity utilisation of the domestic industry suffered a set back on account of the high volume of low cost dumping in the period of investigation. Dumping of the product at much lower prices by international players whose individual capacities exceed 60,000TPA, subdued the domestic prices of Aniline. Production of domestic industry decreased by 5474 MT. Imports from the subject countries were to the extent of 6524.804 MT (Kandla port alone).

### **(c) Sales and Market Share**

It is observed that demand of aniline was 37,196 Mt, 44,220 Mt and 43,860.804 MT in 96-97, 97-98 and 98-99 respectively (import figures are as per DGCIS data and Kandla port statistics till March'99). The share of imports in total demand was 3.4%, 13.22% and 18.33% in 96-97, 97-98 and 98-99, respectively. The share of the petitioner companies was 96.56%, 86.77% and 81.67% respectively in 96-97, 97-98 and 98-99. Thus the share of imports are rising in total demand whereas the share of Indian industry has been declining. Although the quantity for local sales produced by the domestic industry works out to be 39009Mt in 1996-97, 44143Mt in 1997-98 and 40237 Mt in 1998-99 after exclusion of the exported quantity, it is noted that actual domestic industry sales were lower at 35,919 Mt, 38,373 Mt and 35822 Mt in 1996-97, 1997-98 and 1998-99. The selling prices of the petitioners in Rs per Mt were \*\*\*, \*\*\*, and \*\*\* respectively in 96-97, 97-98 and the POI (Apr'98-Mar'99).

### **(d) Closing stocks**

It is observed that the closing stocks of the petitioners were 446.419MT, 2226.814MT, and 2252.454MT during 96-97, 97-98 and the POI. It is seen that 194MT, 1478MT and 1548MT were held by HOCL during 1996-97, 97-98 and 98-99; 34.419MT, 710.314MT and 654.094MT were held by NCPL and 218MT, 38.5Mt and 50.36 MT were held by Anirox during the respective

years.

**(e) Price undercutting and price depression**

The petitioner companies have stated that imports from the subject countries have been undercutting the prices of aniline being sold by the domestic producers. It is seen from the exporters response, that aniline was priced at (cif) USD \*\*\*/Mt or Rs \*\*\*/Mt from Japan; and USD \*\*\*/Mt or Rs \*\*\*/Mt from the USA. The above referred prices are below the unit (MT) cost of production of the petitioners during the period of investigation which was Rs \*\*\*/MT, Rs \*\*\*/Mt and Rs \*\*\*/Mt for HOCL, NCPL and Anirox Pigments, respectively. The dumped imports from the subject countries have further suppressed the prices of aniline in the Indian market and caused losses to the petitioners. The average realisation of aniline in 1996-97 was Rs. \*\*\*/Mt, which increased to Rs. \*\*\*/Mt in 97-98 and dropped to Rs \*\*\*/Mt during the POI. However it is observed that different producers are charging different selling prices and profit/loss of the different companies vary. The average selling prices charged in 1998-99 were Rs. \*\*\*/Mt, Rs \*\*\*/Mt and Rs \*\*\*/Mt by HOCL, NCPL, and Anirox Pigments, respectively. At this price level, HOCL incurred a loss of Rs 816.87 lacs, NCPL incurred a loss of Rs 1175.51 lacs, and Anirox Pigments incurred a loss of Rs 82.75 lacs during the period of investigation.

**M.CONCLUSION ON INJURY**

14. In view of the foregoing it is observed that:-

- a) the quantum of imports from the subject countries has increased in absolute terms;
- b) the market share of the petitioner companies has gone down;
- c) imports are undercutting the prices of the domestic industry;
- d) the domestic industry has been forced to sell at prices that have resulted in losses;



e) closing stock of the domestic industry has gone up.

The Authority therefore concludes that the domestic industry has suffered material injury.

## **N. CAUSAL LINK**

15. It is noted that there have been no changes in demand for Aniline. Production by domestic industry slowed down on account of dumped imports that served to depress domestic prices. As reported by Chemical Information Services, Inc., in its chemical profile dated February 8, 1999, the major producers of aniline in the world have a combined capacity of 1,690 millions of pounds of Aniline per year. World demand in 1997 was 1.37 billion pounds, and in 1998, it was 1.5 billion pounds. The demand projection for 2002 is 1.9 billion pounds. The world market is heavily dependent on MDI which consumes 80-85% of global aniline production particularly in the US and is used in rigid foam markets in construction, appliances and automotive components. Aniline's outlets in India are restricted mostly to only rubber chemicals, dyes and drug and drug intermediates. The Authority notes that even modest volumes of exports at dumped prices by major world manufacturers can affect Indian industry on account of the limited demand structure and the inability of domestic industry to match dumped prices.

The Authority notes that there have been no major fluctuations in demand for Aniline in India. The domestic industry is one of the smallest producers of Aniline in the world and the capacity of Indian industry is adequate to meet the demand for Aniline. The global prices of Aniline dropped significantly in 1998-99 and had an impact on the prices at which it was imported to India. This affected the operations and profitability of the domestic producers as aniline was dumped by major international manufacturers

during the period of investigation.

In establishing that the material injury to the domestic industry has been caused by the imports from the subject countries, the Authority holds that the increase in market share of imports from Japan and USA resulted in decline in the market share of the petitioner. The domestic industry failed to match the landed price of the imported product on account of the rise in prices of the inputs/feedstock required for the manufacture of aniline. Prices of petroleum, fuel oil and benzene stated firming up from 1996 onwards. Imports from the subject countries undercut the prices of the domestic product forcing the domestic industry to sell at unremunerative prices. Resultantly, the domestic industry incurred losses. The material injury to the domestic industry was, therefore, caused by the dumped imports from the said countries.

## **O. INDIAN INDUSTRY S INTEREST & OTHER ISSUES**

16. The purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to reestablish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.

17. It is recognised that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures, particularly if the levy of the anti-dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of

aniline. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.

18. To ascertain the extent of anti-dumping duty necessary to remove the injury to the domestic industry, the Authority relied upon reasonable selling price of Aniline in India for the domestic industry, by considering the optimum cost of production at optimum level of capacity utilisation for the domestic industry.

### **P. LANDED VALUE**

19. The landed value of imports is determined on the basis of export price of Aniline, determined as detailed above in the para relating to dumping, after adding the prevailing level of customs duties and one per cent towards landing and two per cent towards handling charges.

### **Q. CONCLUSIONS**

20. It is seen, after considering the foregoing, that:

(a) Aniline described under Para 5 originating in or exported from Japan and the USA has been exported to India below normal value, resulting in dumping;

(b) the Indian industry has suffered material injury;

(c) injury has been caused by imports from the subject countries.

21. It is considered necessary to impose anti-dumping duty, provisionally, pending final determination, on all imports of Aniline originating in or exported from the subject countries pending investigations.

22. It was decided to recommend the amount of anti-dumping duty equal to the margin of dumping or less, which if levied, would remove the injury to the domestic industry. The landed price of imports was also compared with the fair selling price of the domestic industry, determined for the period of investigations.

Accordingly, it is proposed that provisional anti-dumping duties be imposed, from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on Aniline originating in or exported from Japan and the USA falling under Customs sub-heading 2921.41 of the Customs Tariff Act, pending final determination. The anti-dumping duty shall be the amount mentioned in Col.3.

<u>Country</u>	<u>Name of the Producer/ Exporter</u>	<u>Amount</u>
1.	2.	3.(Rs)/kg
Japan	(a) Sumitomo Chemical Co. Ltd.	3.43
	(b) Mitsui & Co. & all others	6.25
2.		
USA	(a) M/s E.I. duPont de Nemours & Co.	7.88
	(b) All others	7.88

## **R. FURTHER PROCEDURE**

23. The following procedure would be followed subsequent to notifying the preliminary findings:

The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final findings;

Exporters, importers, petitioner and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days of the despatch of this notification. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings.

The Authority would provide opportunity to all interested parties for oral submissions;

The Authority would disclose essential facts before announcing the final findings.

RATHI VINAY JHA, Designated Authority